स्वराज्य

लोकतन्त्र आधरित

प्रदीप कुमार घोडेला


स्वराज्य – स्वयम् के द्वारा स्वयम् पर सन्यम् के साथ शासन
स्वदेश, स्वभाषा, स्वभुषा, स्वसंस्कृति कभी नही त्यागनी चाहीए,प्राण देकर भीइनकी रक्षा करनी चाहीए।
महर्षि दयानंद सरस्वती

विषय

खेल
व्यापार
रोजगार
लोकतंत्र
न्याय
पहचान
अधिकार
मुद्रा
संचार
विज्ञान
प्रामाणिकता
परिवहनपर्यावरण
प्रमाणिकता
विवाह
दण्ड
विदेश
पुराण
`निर्माण
दायित्व
दान
कृषि
चुनाव
शिक्षा
स्वास्थ्य
संस्कार
सुरक्षा
राजनिति

आर्योद्देश्यरत्नमाला

श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिनिर्मिता

ईश्वर : जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हो जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो एक अद्वितीय सर्वशक्तिमान्, निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि और अनन्त आदि सत्य गुण वाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है। जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सर्व जीवों को पाप, पुण्य के फल ठीक–ठीक पहुँचाना है; उसको ईश्वर कहते हैं।

धर्म : जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है। जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक धर्म मानना योग्य है; उसको 'धर्म' कहते हैं।

कार्य : जो किसी पदार्थ के संयोग विशेष से स्थूल होके काम में आता है अर्थात् जो करने के योग्य है; वह उस कारण का 'कार्य' कहाता है।

सृष्टि : जो कर्त्ता की रचना करके कारण द्रव्य किसी संयोग से विशेष अनेक प्रकार कार्यरूप होकर वर्तमान में व्यवहार करने के योग्य है; वह 'सृष्टि' कहाती है।

जाति : जो जन्म से लेकर मरण पर्यन्त बनी रहे। जा अनेक व्यक्तियों में एक रूप से प्राप्त हो। जो ईश्वरकृत अर्थात् मनुष्य, गाय, अश्व और वृक्षादि समूह हो; वे 'जाति' शब्दार्थ से लिये जाते हैं।

मनुष्य : अर्थात् जो विचार के विना किसी काम को न करे; उसका नाम 'मनुष्य' है।

आर्य : जो श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मात्मा परोपकारी, सत्य विद्यादि गुणयुक्त और आर्यावर्त्त देश में सब दिन से रहने वाले हो, उनको 'आर्य' कहते हैं।

आर्यावर्त्त देश : हिमालय, विन्ध्याचल, सिन्धु नदी और ब्रह्मपुत्रा नदी इन चारों के बीच और जहाँ तक उनका विस्तार है उनक८ मध्य में जो देश है; उसका नाम 'आर्यावर्त्त' है।

दस्यु : अनार्य अर्थात् जो अनाड़ी आर्यों के स्वभाव और निवास से पृथक् डाकू", चोर, हिंसक कि जो दुष्ट मनुष्य है, वह 'दस्यु' कहाता है।

वर्ण : जो गुण और कर्मों के योग से ग्रहण किया जाता है; वह 'वर्ण' शब्दार्थ से लिया जाता है।

वर्ण के भेद : जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रादि हो; वे 'वर्ण' कहाते हैं ।

आश्रम : जिनमें अत्यन्त परिश्रम करके उत्तम गुणों का ग्रहण और श्रेष्ठ काम किये जायं उनको 'आश्रम' कहते हैं।

आश्रम के भेद : जो सद्विद्यादि शुभ गुणों का ग्रहण तथा जितेन्द्रियता से आत्मा और शरीर के बल को बढ़ाने के लिए ब्रह्मचारी; जो सन्तानोत्पत्ति और विद्यादि सब व्यवहारों को सिद्ध करने के लिए गृहाश्रम; जो विचार के लिए वानप्रस्थ; और सर्वोपकार करने के लिए संन्यासाश्रम होता है; ये 'चार आश्रम' कहाते हैं।

विद्यापुस्तक : जो ईश्वरोक्त, सनातन, सत्यविद्यामय चार वेद हो; उनको 'विद्यापुस्तक' कहते हैं।

आचार्य : जो श्रेष्ठ आचार को ग्रहण कराके सब विद्याओं को पढ़ा देवे; उसको 'आचार्य कहते हैं।

गुरु : जो वीर्यदान से लेके भोजनादि कराके पालन करता है; इससे पिता को 'गुरु' कहते हैं और जो अपने सत्योपदेश से हृदय के अज्ञान रूपी अन्धकार को मिटा देवे उसको भी 'आचार्य' कहते हैं।

आर्योद्देश्यरत्नमाला

श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिनिर्मिता

पूजा : जो ज्ञानादि गुण वाले का यथायोग्य सत्कार करना है; उसको 'पूजा' कहते हैं।

अपूजा : जो ज्ञानादि रहित जड़ पदार्थ और जो सत्कार के योग्य नहीं है; उसको जो सत्कार करना है; वह 'अपूजा'कहाती है ।

पण्डित :जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला, धर्मात्मा सत्यवादी, सत्यप्रिय, विद्वान् और सबका हितकारी है, उसको 'पण्डित' कहते हैं।

परीक्षा : जो प्रत्यक्षादि आठ प्रमाण, वेदविद्या, आत्मा की शुद्धि और सृष्टिक्रम से अनुकूल विचार सत्यासत्य को ठीक–ठीक निश्चय करना है; उसको 'परीक्षा' कहते हैं।

आठ प्रमाण : प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और अभाव ये 'आठ प्रमाण' हैं। इन्हीं से सब सत्यासत्य का यथावत् निश्चय मनुष्य कर सकता है।

लक्षण : जिससे लक्ष्य जाना जाय जो कि उसका स्वाभाविक गुण है। जैसे कि रूप से अग्नि जाना जाता है इसलिये इसको 'लक्षण' कहते हैं।

प्रमेय : जो प्रमाणों से जाना जाता है जैसा कि आंख का प्रमेय रूप अर्थ है। जो कि इन्द्रियों से प्रतीत होता है; उसको 'प्रमेय' कहते हैं।

प्रत्यक्ष : जो प्रसिद्ध शब्दादि पदार्थों के साथ श्रोत्रादि और मन के निकट सम्बन्ध से ज्ञान होता है; उसको 'प्रत्यक्ष' कहते हैं।

अनुमान : किसी पूर्व दृष्ट पदार्थ के अङग को प्रत्यक्ष देखके पश्चात् उसके अदृष्ट अङगी का जिससे यथावत् ज्ञान होता है; उसको 'अनुमान' कहते हैं।

उपमान : जैसे किसी ने किसी से कहा कि गाय के समतुल्य नील गाय होती है; जो कि सादृश्य उपमा से ज्ञान होता है, उसको 'उपमान' कहते हैं।

शब्द : जो पूर्ण आप्त परमेश्वर और पूर्वोक्त आप्त मनुष्य का उपदेश है; उसी को 'शब्द प्रमाण' कहते हैं।

ऐतिह्य : जो शब्द प्रमाण के अनुकूल हो; जो कि असम्भव और झूठा लेख न हो; उसी को 'इतिहास' कहते हैं ।

अर्थापत्ति : जो एक बात के कहने से दूसरी बात विना कहे समझी जाये उसको 'अर्थापत्ति' कहते हैं।

सम्भव : जो बात प्रमाण युक्ति और सृष्टिक्रम से युक्त हो; वह 'सम्भव' कहाता है ।

अभाव : जैसे किसी ने किसी से कहा कि तू जल ले आ। उसने वहाँ देखा कि यहाँ जल नहीं है परन्तु जहाँ जल है वहाँ से ले आना चाहिए। इस अभाव निमित्त से जो ज्ञान होता है; उसको 'अभाव' प्रमाण कहते हैं।

शास्त्र : जो सत्यविद्याओं के प्रतिपादन से युक्त हो और जिस करके मनुष्यों को सत्य सत्य शिक्षा हो; उसको 'शास्त्र' कहते हैं।

वेद : जो ईश्वरोक्त, सत्यविद्याओं से ऋक्संहितादि चार पुस्तक है कि जिनसे मनुष्यों को सत्य–सत्य ज्ञान प्राप्त होता है; उनको 'वेद' कहते हैं।

पुराण : जो प्राचीन ऐतरेय, शतपथ ब्राह्मणादि ऋषि मुनिकृत सत्यार्थ पुस्तक हो; उन्हीं को 'पुराण', 'इतिहास', 'कल्प', 'गाथा', 'नाराशंसी' कहते हैं।

उपवेद : जो आयुर्वेद वैद्यकशास्त्रा, जो धनुर्वेद शस्त्रास्त्रा विद्या, राजधर्म, जो गान्धर्ववेद गानशास्त्रा और अर्थवेद जो शिल्पशास्त्रा है; इन चारों को 'उपवेद' कहते हैं।

वेदाङग : जो शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष आर्ष सनातन शास्त्रा हो; इनको 'वेदाङग' कहते हैं।

उपाङग : जो ऋषि मुनिङ्कृत मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, साङ्ख्य और वेदान्त छः शास्त्र हो, इनको 'उपाङग कहते हैं।

नमस्ते :मैं तुम्हारा मान्य करता हूँ ।

रोजगार

मान लिजिए :-

एक गांव की जनसंख्या =2000 लोग

कमाने वाले = 500 लोग

तब कुछ नियम बनाए :-

पहला नियम :----

1. एक आदमी एक ही काम करेगा।
2.सब लोग जिस अकेले special आदमी का जो सेवा या व्यापार काम है, उसी से वो सेवा लेंगे।

उदाहरण 1.

~ पूरे गांव का रिचार्ज एक ही व्यक्ति करेगा।
~ पुरे गांव में कपड़ा एक ही व्यक्ति बेचेगा।
~ पुरे गांव में मीठा(गुङ ,शक्कर आदि) एक ही व्यक्ति बेचेगा।
~ पुरे गांव में चप्पल ,जुते एक ही व्यक्ति बेचेगा।
~पुरे गांव में TV ,डिश ,केबल का काम एक ही व्यक्ति करेगा ।
~ कंप्यूटर,इन्टरनेट आदि की सेवा व काम एक ही व्यक्ति करेगा ।

समझे :::::----- ईस तरह हम जितने भी हमारी जरूरत के हिसाब से काम हो , हम इनही 500 व्यक्तियों के बीच बांट देंगे ।

उदाहरण 2.

~ अगर हमारे गांव में रिचार्ज की सेवा है तो हम किसी हाल में बाहर से नहीं करवाएंगे ,उसी व्यक्ति से करवाएंगे ।
~ अगर गांव में कपङा मिलता है तो उसी गांव के व्यक्ति से लेकर आयेगें ।बाहर नहीं जाना ।

जो जो गांव में उपलब्ध है हम अपने गांव से ही लेंगे ।
बाहर से लेंगे तो गरीबी और मन्दी की स्थिति आ जाएगी ।

रोजगार

दुसरा नियम :-----

1.लाभ प्रतिशत हर किसी को देंगे

2.घूमता हुआ धन

उदाहरण 1.

1.हर किसी को सामान या सेवा लेने पर लाभ प्रतिशत दुकान वाले को देना होगा।

####----- 10 %तो कम से कम ----####

ध्यान रहे ::::::::-भाई चारा नहीं करना है इस मामले में, लाभ हर हाल में देना ही देना है।

उदाहरण 2.

1. हर व्यक्ति को धन भविष्य के लिए जमा भी करना है।

लेकिन उससे ज्यादा जरूरी है, कि आप उस धन से एक दूसरे से सामान लगातार खरीदते रहे, जरूरत अनुसार।

अब अर्थव्यवस्थाओं के नियम को समझने की कोशिश करें ::--

अगर 500 आदमी

6बार एक महीने में

100 रुपये का रिचार्ज

1 ही रिचार्ज वाले व्यक्ति से करवाएंगे

तब

अगर लाभ प्रतिशत

10 % देंगे प्रति रिचार्ज

रिचार्ज वाले की कमाई

500 *6 *100 *10%=30,000 रुपये

इसी प्रकार हर किसी को एक निश्चित लाभ प्रतिशत देकर उपर दिये गये सभी नियमों का पालन सही ढंग से करना होगा।

और हर 500 में से प्रत्येक की आय या कमाई 30,000 रुपये तो होगी ही होगी ।
फिर दान से शिक्षा ,स्वास्थ्य और संस्कार उपलब्ध कराने अत्यंत आवश्यक है ।
उद्योग स्थापित कर बाहर का धन गांव में लाया जाना ,और गांव का विकास करना ।
हर बच्चे को इन सब उद्योग और कामों की सप्ताह में पांच दिन ट्रेनिंग देना और दक्ष (expert) बनाया जाना अनिवार्य है ।प्राकृतिक कृषि और प्राकृतिक नवीकरणीय उद्योग , पशुधन के साथ स्थापित हो। कभी भी गरीबी बेरोजगारी नहीं आएगी ।

पशुधन व कृषि साथ-साथ जीवित रहते हैं एक दूसरे पर निर्भर होकर वरना दोनों मर जाते हैं ।

आश्रम

पहला आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम है। यह विद्या पढ़ने, सुशिक्षा लेने और बलवान् होने के लिए है। जब बच्चा पैदा होता है तो सबसे पहले मां-बाप उसकी देखभाल रखते हैं और अभ्यास के साथ उसका पालन करते हैं। जब कुछ बड़ा हो जाता है तब उसको गुरु के पास पढ़ने के लिए बैठा देते हैं। इसी का नाम ब्रह्मचर्य आश्रम है। इसकी अवधि लड़के के लिए कम से कम 25 साल और लड़की के लिए 16 साल रखी गई है। इस आश्रम की जिम्मेदारी तीन व्यक्तियों पर होती है। पहली माता, जो पांच वर्ष तक उसे आवश्यक बातों का अभ्यास कराती है, यदि माता योग्य हो तो वह अपने बच्चे को अच्छी-अच्छी बातें सिखाती है और बच्चा बिना परिश्रम के बहुत सी ज्ञान की बातें सीख लेता है। यदि माता कुलक्षणी हो तो उसका बच्चा आरंभ से ही बुरी बातें सीख लेता है और उसका सुधारना कठिन हो जाता है।

पांच वर्ष के पीछे बच्चा पिता के साथ रहने लगता है। यदि बाप बुरा है तो बच्चा बुरा और अच्छा है तो अच्छा हो जाता है। जब बच्चा आठ साल का होता है तब उसका उपनयन करा के गुरु के पास विद्या प्राप्ति के लिए भेज देते हैं। यह नियम लड़के और लड़की दोनों के लिए समान है। परन्तु भेद यह है कि लड़के और लड़की इस अवस्था के पश्चात् अलग-अलग पाठशालाओं में भेज दिए जाते हैं। सहशिक्षा इस काल के पश्चात् नहीं दी जाती, जो सदाचार की बाधक है।

दूसरा गृहस्थाश्रम- यह सब प्रकार के उत्तम व्यवहार सिद्ध करने के लिए है अर्थात् सन्तान उत्पन्न करना और उसको योग्य बनाना, धर्म से धन कमाना और धर्म में व्यय करना और अन्य आश्रमियों का पालन। इसलिए इसे ज्येष्ठ आश्रम भी कहते हैं। जो आचार से रहता हुआ आजन्म ब्रह्मचारी रहना चाहे वह रह सकता है। परन्तु जो न रह सके वह अपने-अपने वर्ण में विवाह कर सकता है ऐसे पुरुष के लिए भी कम से 25 वर्ष और कन्या के लिए 16 वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रहना अनिवार्य है। विवाह करने वाले पुरुष और स्त्री यदि 25 वर्ष से भी दीर्घ काल तक ब्रह्मचर्य रखना चाहें तो रख सकते है। परन्तु 48 वर्ष के पश्चात नहीं रखना चाहिए।

कुमार और कुमारी का धर्मशास्त्रानुसार दाम्पत्य सम्बन्ध वैदिक परिभाषा में विवाह कहलाता है। विधुर से विधवा के सम्बन्ध को पुनर्विवाह कहते हैं। यह शूद्र कर्म है, द्विज कर्म नहीं है, परन्तु पाप कर्म भी नहीं है।

विधुर का कन्या से विवाह अवैदिक कर्म है इसके करने से बहुत से बिगाड़ उत्पन्न हो जाते हैं, और इससे एक कुमार और एक विधवा के अधिकार का हनन होता है।

तीसरा वानप्रस्थ आश्रम- यह विज्ञान के बढ़ने और तपश्चर्या करने के लिए है। यह गृहस्थ का मोह छोड़कर बाहर वन में जाकर रहने का आश्रम है। वर्तमान काल में वैदिक राज्य न होने के कारण वानप्रस्थियों को वन जाने की पर्याप्त सुविधायें नहीं हैं।

चौथा संन्यासाश्रम- यह वेदादि शास्त्रों का प्रचार, धर्म व्यवहार का ग्रहण, दुष्ट व्यवहार का त्याग, सत्योपदेश और सबको निःस्सन्देह करने के लिए है।








संस्कार

जिन करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं । इसलिये संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है ।

संस्कारविधी
महर्षि दयानंद सरस्वती

'गर्भाद्या मृत्युपर्यन्ताः संस्काराः षोडशैव हि ।'

—(संस्कारविधि, पृष्ठ ३)

'अर्थात् गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त सोलह संस्कार ही होते हैं । इस पर पौराणिक बन्धुओं का यह आक्षेप है कि महर्षि ने इस अपनी प्रतिज्ञा का निर्वाह अपने ग्रन्थ में नहीं किया है । क्योंकि संस्कारविधि में सोलह संस्कारों के अतिरिक्त 'गृहाश्रमसंस्कार' तथा 'शालादिसंस्कार' भी माने हैं, जिन्हें मिलाने से संस्कारों की संख्या अधिक हो जाती है । इस के उत्तर में हमारा निवेदन है कि महर्षि दयानन्द ने निम्नलिखित १६ संस्कार ही माने हैं—

१. गर्भाधानम् ।
२. पुंसवनम् ।
३. सीमन्तोन्नयनम् ।
४. जातकर्मसंस्कारः ।
५. नामकरणम् ।
६. निष्क्रमणसंस्कारः ।
७. चूडाकर्मसंस्कारः ।
८. अन्नप्राशनसंस्कारः ।
९. कर्णवेधसंस्कारः ।
१०. उपनयनसंस्कारः ।
११. वेदारम्भसंस्कारः ।
१२. समावर्त्तनसंस्कारः ।
१३. विवाहसंस्कारः ।
१४. वानप्रस्थाश्रमसंस्कारः ।
१५. संन्यासाश्रमसंस्कारः ।
१६. अन्त्येष्टिकर्मविधिः ।

इन संस्कारों से भिन्न 'गृहाश्रमसंस्कार' या 'शालासंस्कार' ये विवाहसंस्कार के अन्तर्गत ही हैं, उस से भिन्न नहीं । क्योंकि इन में गार्हस्थ्य जीवन के कर्त्तव्यों का ही उपदेश किया गया है । कई सज्जनों का यह कथन भी ठीक नहीं कि 'अन्त्येष्टि' को महर्षि ने संस्कार नहीं माना है । क्योंकि—महर्षि ने इसे 'अन्त्येष्टि-कर्म' लिखा है, संस्कार नहीं । उन्हें महर्षि के निम्न वचनों पर ध्यान देना चाहिए—

(क) 'अन्त्येष्टि-कर्म उस को कहते हैं कि शरीर के अन्त का संस्कार है, जिस के आगे उस शरीर के लिए कोई भी अन्य संस्कार नहीं है ।' —(संस्कारविधि, पृष्ठ २१८)

(ख) **इति मृतकसंस्कारविधिः समाप्तः ।**

—(संस्कारविधि, पृष्ठ २२६)

यहां महर्षि ने 'अन्त्येष्टि' को स्पष्ट ही संस्कार माना है । यथार्थ में महर्षि को 'कर्म' शब्द भी संस्कार अर्थ में अभिप्रेत है ।

[१]

अथ गर्भाधानविधिं वक्ष्यामः

निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधिः ।

—मनुस्मृति–द्वितीयाध्याये, श्लोकः १६ ।।

अर्थ—मनुष्यों के शरीर और आत्मा के उत्तम होने के लिये निषेक अर्थात् गर्भाधान से लेके श्मशानान्त अर्थात् अन्त्येष्टि=मृत्यु के पश्चात् मृतक शरीर का विधिपूर्वक दाह करने पर्यन्त **१६ संस्कार** होते हैं ।

शरीर का आरम्भ गर्भाधान और शरीर का अन्त भस्म कर देने तक सोलह प्रकार के **उत्तम संस्कार** करने होते हैं । उनमें से प्रथम गर्भाधान–संस्कार है ।

गर्भाधान उस को कहते हैं कि जो **''गर्भस्याऽऽधानं वीर्यस्थापनं स्थिरीकरणं यस्मिन् येन वा कर्मणा, तद् गर्भाधानम् ।''** गर्भ का धारण, अर्थात् वीर्य का स्थापन गर्भाशय में स्थिर करना जिस से होता है । उसी को गर्भाधान संस्कार कहते हैं ।

जैसे बीज और क्षेत्र के उत्तम होने से अन्नादि पदार्थ भी उत्तम होते हैं । वैसे उत्तम, बलवान् स्त्री–पुरुषों से सन्तान भी उत्तम होते हैं। इस से पूर्ण युवावस्था यथावत् ब्रह्मचर्य का पालन और विद्याभ्यास करके, अर्थात् न्यून से न्यून १६ वर्ष की कन्या और २५ पच्चीस वर्ष का पुरुष अवश्य हो और इस से अधिक वयवाले होने से अधिक उत्तमता होती है, क्योंकि विना सोलहवें वर्ष के गर्भाशय में बालक के शरीर को यथावत् बढ़ने के लिये अवकाश और गर्भ के धारण–पोषण का सामर्थ्य कभी नहीं होता और २५ पच्चीस वर्ष के विना पुरुष का वीर्य भी उत्तम नहीं होता । इस में यह प्रमाण है—

पञ्चविंशे ततो वर्षे पुमान् नारी तु षोडशे ।
समत्वागतवीर्यौ तौ जानीयात् कुशलो भिषक् ।।१।।

—सुश्रुते सूत्रस्थाने, अ० ३५।१०।।

ऊनषोडशवर्षायाम् अप्राप्तः पञ्चविंशतिम् ।
यद्याधत्ते पुमान् गर्भं कुक्षिस्थः स विपद्यते ।।२।।
जातो वा न चिरं जीवेज्जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः ।
तस्मादत्यन्तबालायां गर्भाधानं न कारयेत् ।।३।।

—सुश्रुते सूत्रस्थाने, अ० १०।४७–४८।।

ये सुश्रुत के श्लोक हैं। शरीर की उन्नति वा अवनति का विधि जैसा वैद्यकशास्त्र में है, वैसा अन्यत्र नहीं। उसका मूल विधान आगे वेदारम्भ में लिखा जायेगा, अर्थात् किस-किस वर्ष में कौन-कौन धातु किस-किस प्रकार का कच्चा वा पक्का, वृद्धि वा क्षय को प्राप्त होता है, यह सब वैद्यकशास्त्र में विधान है, इसलिए गर्भाधानादि संस्कारों के करने में वैद्यकशास्त्र का आश्रय विशेष लेना चाहिये।

अब देखिये सुश्रुतकार परम वैद्य कि जिन का प्रमाण सब विद्वान् लोग मानते हैं, वे विवाह और गर्भाधान का समय न्यून से न्यून १६ सोलह वर्ष की कन्या और २५ पच्चीस वर्ष का पुरुष अवश्य होवे, यह लिखते हैं।

जितना सामर्थ्य २५ पच्चीसवें वर्ष में पुरुष के शरीर में होता है उतना ही सामर्थ्य १६ सोलहवें वर्ष में कन्या के शरीर में हो जाता है। इसलिए वैद्य लोग पूर्वोक्त अवस्था में दोनों को समवीर्य अर्थात् तुल्य सामर्थ्यवाले जानें ॥१॥

सोलह वर्ष से न्यून अवस्था की स्त्री में २५ पच्चीस वर्ष से कम अवस्था का पुरुष यदि गर्भाधान करता है, तो वह गर्भ उदर में ही बिगड़ जाता है ॥२॥

और जो उत्पन्न भी हो तो अधिक नहीं जीवे, अथवा कदाचित् जीवे भी तो उसके अत्यन्त दुर्बल शरीर और इन्द्रिय हों। इसलिये अत्यन्त बाला अर्थात् सोलह वर्ष की अवस्था से कम अवस्था की स्त्री में कभी गर्भाधान नहीं करना चाहिए ॥३॥

चतस्त्रोऽवस्थाः शरीरस्य वृद्धिर्यौवनं सम्पूर्णता किञ्चित्परि-हाणिश्चेति। आषोडशाद् वृद्धिराचतुर्विंशतेर्यौवनमाचत्वारिंशतः सम्पूर्णता ततः किञ्चित्परिहाणिश्चेति॥

अर्थ—सोलहवें वर्ष से आगे मनुष्य के शरीर के सब धातुओं की वृद्धि और पच्चीसवें वर्ष से युवावस्था का आरम्भ, चालीसवें वर्ष में युवावस्था की पूर्णता अर्थात् सब धातुओं की पूर्ण पुष्टि, और उस से आगे किञ्चित्-किञ्चित् धातु वीर्य की हानि होती है, अर्थात् ४० चालीसवें वर्ष सब अवयव पूर्ण हो जाते हैं। पुनः खान-पान से जो उत्पन्न वीर्य धातु होता है, वह कुछ-कुछ क्षीण होने लगता है।

इस से यह सिद्ध होता है कि यदि शीघ्र विवाह करना चाहें तो कन्या १६ वर्ष की और पुरुष २५ पच्चीस वर्ष का अवश्य होना चाहिये। मध्यम समय कन्या का २० वर्ष पर्यन्त और पुरुष का ४० चालीसवां

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

वर्ष, और उत्तम समय कन्या का २४ चौबीस वर्ष और पुरुष का ४८ अड़तालीस वर्ष पर्यन्त का है ।

जो अपने कुल की उत्तमता, उत्तम सन्तान, दीर्घायु, सुशील, बुद्धिबल पराक्रमयुक्त, विद्वान् और श्रीमान् करना चाहें, वे १६ सोलहवें वर्ष से पूर्व कन्या और २५ पच्चीसवें वर्ष से पूर्व पुत्र का विवाह कभी न करें । यही सब सुधार का सुधार, सब सौभाग्यों का सौभाग्य, और सब उन्नतियों की उन्नति करनेवाला कर्म है कि इस अवस्था में ब्रह्मचर्य रखके अपने सन्तानों को विद्या और सुशिक्षा ग्रहण करावें कि जिस से उत्तम सन्तान होवें ।

ऋतुदान का काल

ऋतुकालाभिगामी स्यात् स्वदारनिरतस्सदा ।
पर्ववर्जं व्रजेच्चैनां तद्व्रतो रतिकाम्यया ॥१॥
ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडश स्मृताः ।
चतुर्भिरितरैः सार्द्धमहोभिः सद्विगर्हितैः ॥२॥
तासामाद्याश्चतस्त्रस्तु निन्दितैकादशी च या ।
त्रयोदशी च शेषास्तु प्रशस्ता दश रात्रयः ॥३॥
युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु ।
तस्माद्युग्मासु पुत्रार्थी संविशेदार्त्तवे स्त्रियम् ॥४॥
पुमान् पुंसोऽधिके शुक्रे स्त्री भवत्यधिके स्त्रियाः ।
समे पुमान् पुंस्त्रियौ वा क्षीणेऽल्पे च विपर्ययः ॥५॥
निन्द्यास्वष्टासु चान्यासु स्त्रियो रात्रिषु वर्जयन् ।
ब्रह्मचार्येव भवति यत्र तत्राश्रमे वसन् ॥६॥

—मनुस्मृतौ अ० ३ ॥

अर्थ—मनु आदि महर्षियों ने ऋतुदान के समय का निश्चय इस प्रकार से किया है कि—

सदा पुरुष ऋतुकाल में स्त्री का समागम करे, और अपनी स्त्री के विना दूसरी स्त्री का सर्वदा त्याग रखे । वैसे स्त्री भी अपने विवाहित पुरुष को छोड़ के अन्य पुरुषों से सदैव पृथक् रहे । जो स्त्रीव्रत अर्थात् अपनी विवाहित स्त्री ही से प्रसन्न रहता है, जैसे कि पतिव्रता स्त्री अपने विवाहित पुरुष को छोड़ दूसरे पुरुष का संग कभी नहीं करती, वह पुरुष जब ऋतुदान देना हो, तब पर्व अर्थात् जो उन ऋतुदान के १६ सोलह दिनों में—**पौर्णमासी, अमावस्या, चतुर्दशी** वा **अष्टमी** आवे, उस को छोड़ देवे । इन में स्त्री-पुरुष रतिक्रिया कभी न करें ॥१॥

इस के बाद स्वामी जी ने ईच्छानुसार पुत्रपुत्रिादि जन्म उपदेश किया है।
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

वेद

वेद शब्द को वैदिक तारिके से समझने का प्रयत्न करते हैं। विद धातु से उत्पन्न हुआ शब्द।

विदित जानकारी होना, लेकिन किसकी
विद्यार्थी वह जो विदया ग्रहण करे,
विद्यालय जहां विदया का दान मिले,
विद्वान जो विदया में निपूण हो,
विद्जानिक वैज्ञानिक
विदूषी जो विद्यावान स्त्री हो,
विद्या किसी पदार्थ की व्यव्हार व गुणों की विशेष गूढ जानकारी,
वेद वो ज्ञान जो ऋषियों ने अनुभव किया
ऋषि माने शोधकर्ता वैज्ञानिक

प्रकृति से परमात्मा पर्यन्त ज्ञान प्राप्त करके लाभान्वित होने के अर्थ जगत् उत्पन्न किया गया है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये भगवान् ने सृष्टि के आरंभ में 4 ऋषियों के द्वारा वेद ज्ञान का प्रकाश किया। ऋषियों के नाम यह है- अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा। यह देहधारी मनुष्य थे और सब जीवों से अधिक पवित्र आत्मा थे, यह पवित्रता उन्होंने पूर्व सृष्टि में किये हुए कर्मो से प्राप्त की थी।

ऋषि- उसे कहते हैं जो वेद मन्त्रों के अर्थो के सूक्ष्म द्रष्टा हों या जिनमें ऐसी योग्यता हो।

चार वेद यह है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

वेदों के चार विभाग का कारण

(1) ऋग्वेद में सब पदार्थो के गुणों का प्रकाश किया है जिससे उनमें प्रीति बढ़कर उपकार लेने की प्रवृत्ति हो सके।

(2) यजुर्वेद में गुण ज्ञान के अनन्तर क्रियारूप उपकार करके सब जगत् का अच्छे प्रकार से हित हो सके, इस विद्या को जताया है।

(3) सामवेद में ज्ञान, कर्म और उपासना कांड की वृद्धि का फल कितना और कहां तक होना चाहिए इसका विधान किया है।

(4) अथर्ववेद- तीन वेदों में जो-जो विद्या हैं उन सबके शेष भाग की पूर्ति विधान रक्षा और संशय-निवृत्ति के लिए है।

स्वास्थ्य

यदि आप बहरे हैं तो सुन नही सकते,आप संगीत और व्यक्ति या दूरदर्शन या पास आ रहे तीव्र गति के वाहन के सामने से नही बच सकते । अंधे हैं तब देख नहीं सकते ,रंग के बारे म कदाचित नही जानते, संगणक किसी काम का नही।

माने आप बिमार हो, अनेकों तथ्यों को आप नही समझ सकत,ज्वर हो तब तो अलग बेबसी होगी ।

अगर वायु या कब्ज हो तो चिडचिडा, और मानसिक तनाव के कारण अनुचित व्यवहार ।

अगर बहूत बूरा है कि आपको पक्षाघात है, तब आप एक बोझ है।

एसे में आप परेशान हैं, क्योंकि जो भी आप कर रहे हैं, वो सही नही हो रहा है, किसी न किसी प्रकार की हानि मान–सम्मान, धन यश आदि की हानि हो रही है, और एसा निरंतर चलता है तब आप सब कुछ खो कर गरीब व दरिद्र हो जाते हैं।

अब यही हारा हुआ ,शरीर, मान या धन से गुलामी,चौरी,यौन अपराध आदि हर प्रकार के पाप या कूकर्म करता है, क्योंकि बेबस है, उसका शरिर ही उसके बस में नही है। बुद्धि को क्या वश में करेगा । यही वो कमजोर कडी है जो समाज के लिए हर प्रकार से घातक है।

उसमें दोष उस व्यक्ति का नही उस रोग का है, जिसको हमारा समाज ठीक नहीं कर पाया।

इसलिए सबको स्वस्थ रखना आवश्यक है। वरना चौर,लूटेरे,दूखी, दरिद्र, बलात्कारी पैदा हो जाएंगे ।

मनुष्य समाज और मनुष्य जीवन के चार विभाग

वेदों के उपदेश और मनुष्य शरीर की रचना के आधार पर मनुष्य समाज का विभाग चार भागों में किया गया है जिनको 'वर्ण' नाम से कहते हैं और वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं। मनुष्य जीवन का विचार चार आश्रमों मे किया गया है। वे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यासाश्रम हैं।

वर्ण

ब्राह्मण वर्ण– अविद्या के नाश, विद्या की वृद्धि और सदाचार की शिक्षा के लिए। शम, दम तप, शौच, आस्तिक्य, ज्ञान और विज्ञान इसके विशेष गुण होंगे।

क्षत्रिय वर्ण– अन्याय के नाश और जाति, पतित और दु:खित जनों की रक्षा के लिए। शौर्य, धृति, दक्षता और युद्ध से पलायन न करना और ईश्वर–भावादि क्षत्रिय के विशेष गुण होंगे।

वैश्य वर्ण – जीवन–यापन की आवश्यक सामग्री को उत्पन्न करना और इधर–उधर से लाकर जुटाना वैश्य कर्म हैं।

शूद्र वर्ण– जिसको पढ़ने–पढ़ाने से कुछ भी न आवे, वह निर्बुद्धि व मूर्ख होने से शारीरिक श्रम द्वारा उपर्युक्त तीनों वर्णों की सेवा और सहायता करने के लिए शूद्र हैं।

वे **वर्ण गुण, कर्म स्वभाव के आधार पर होते है, जन्म के आधार पर नहीं।** आर्य समाज मनुष्य मात्र के बालकों व बालिकाओं को बिना किसी भेद–भाव के समान रूप से विद्या प्राप्त करने का अधिकारी मानता है और विद्यालय में पढ़ाई की समाप्ति पर जिस–जिस विद्यार्थी का जो–जो वर्ण उनकी योग्यतानुसार उनका आचार्य निश्चित करें, वह–वह उनका वर्ण मानता है चाहे उनका पिता का कुछ भी वर्ण हो।

रोजगार

एक क्षेत्र सीमा के परीधी में सूइ से लेकर जहाज तक सभी तरह की व्यवस्थाएं आ जाएं , इसको ऐक क्षेत्र निर्धारित करें ।

अब इस क्षेत्र में आवश्यकता के आधार पर व समयनुसार सामान्य व विशेष तरह के रोजगार और सभी वैभव संपन्न, जीवनयापन, सुरक्षा ,तकनीक आदि से संपूर्ण राज्य को व्यवस्थित करें।

एक गांव में सब प्रकार की सामान्य दैनिक उपभोग और हर तरह के रोग को ठीक करने में सक्षम औषधियां उपलब्ध हों, सुरक्षा व संपर्क साधने के यंत्र होवे।

एक क्षेत्र में इतना सामर्थय हो कि पृथ्वी पर सभी देशों के साथ संपर्क व सुरक्षा करने में सक्षम हो।

भारत का प्रत्येक गांव स्वावलंबी है ।

भारत के हर गांव व क्षेत्र की एक विशेषता है, जैसे राजस्थान में बकरी दूध देती है लेकिन हरियाणा में गांय, भैंस ,परंतु दूध दोनो स्थानों पर उपलब्ध है।

इसी प्रकार हर क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर प्रति एक विशिष्ट संसाधन को जुटाना होगा, जो हमारे कार्य को आवश्यकता को पूर्ण करने में सक्षम है।

भारत के प्रत्येक गांव में हर प्रकार की सामग्री व संसाधन किसी न किसी रुप में उपब्ध हैं।

राष्ट्र

हम ब्रहमाण्ड के अंश हैं, ब्रहमाण्ड छोटे–छोटे और विश्व छोटे–छोटे अणुओं से बना हुआ है।
अणु ठण्डे होंने पर जमते हैं गर्म होने पर दौड़ते हैं, जैसे–जैसे समय बदलता है उनकी स्थिति बदलती है।
कोई मिलते हैं विखरते हैं टूटते हैं जुड़ते हैं ओर जैसे समय कभी शुरू नहीं हुआ कभी खत्म वाला नहीं है। न इसका आदि है न ही अन्त हैं सदेव गतिमान है सनातन है चलता रहेगा। समय चलेगा तो बदलाव भी हमेशा चलते रहेंगे।

पौधे जब प्रक्रिया करेंगे बीज बनेंगे, जड़ बनेंगे, तना बनेगा, पौधे बनेंगे शाखांए निकलेंगी, पत्ते बनेंगे, फूल बनेंगे, फल बनेंगे, फिर बीज बनेंगे । यही प्रक्रम लगातार निरंतर चलता रहेगा कुछ अन्य बदलाव आऐंगे तो कुछ और बनेगा बीज में तने में जड़, फल, फूल में एक जगह ीाी निभाती आई तो ये चक्र समाप्त हो जाएगा। बिमारी क्यों आएगी क्योंकि उनकी कुछ जरूरतें हैं जो उन्हें चाहिए वो मिली नहीं या फिर उनको वा मिला जिनकी उनको जरूरत नहीं थी। न्युन ओर अधिकता दोनों ही जीवन चक्र का विनाश कर देती है। लेकिन बहनों और भाईयो हम केवल पेउ़ पौधे नहीं हैं हम उस ब्रहमाण्ड की सबसे अत्कृश्ट श्रेश्ठ रचना हैं।

हमें पौधों की तरह केवल भूमि, जल, वायु, और प्रकाश की जरूरत नहीं है। जितने ज्यादा हम में गुण है उतनी ही ज्यादा हमारी जरूरते हैं। जैसे हम समाज में रहते हैं इसी के रूप में जीवित हैं और हर तरह से समृद्धता का सुख भोगना चाहते हैं। हमारी कुछ सामाजिक और कुछ शारीरिक व मानसिक जरूरते हैं जैसे समाज में जीने के लिए सामाजिक व्यवहार रहन–सहन के हजारों लाखों आडम्बर और नियम है। सरकारी तंत्र, संस्कृति, सुरक्षा तंत्र, न्याय तत्र, व्यापार तंत्र, संस्कृति तंत्र, प्रशासन तंत्र, परिवहन तंत्र आदि।

हम एक राश्ट्र के नागरिक हैं, हमारा एक देश है, देश में राज्य है राज्य के नियम होते हैं और ढेरों व्यवस्थाएं हैं। जैसे सभी नागरिकों से बना एक राश्ट्र फिर सभी उसके संरक्षक है जो सब जरूरतों के आकार पर एक दूसरे के साथ मिल जूल कर काम कर रहे हैं। कुछ लोग देश की रक्ष कर रहें है आतंकवादियों से कातिलों से। दहशतगर्दों से, दुशमनों से जैसे देश के सैनिक और सिपाही।

कुछ लोग देश की बिमारी जैसे मलेरिया तपेदिक, चोट घाव आदि को ठीक करने के लिए लड़ रहे हैं जैसे डॉक्टर वैद्य आदि।

कुछ लोग सामान इधर से उधर ले जा रहे हैं जैसे रेल से गाड़ी से, बैलगाड़ी से

कुछ लोग देश का निर्माण कर रहे हैं जैसे मजदुर और रामिस्त्री, हर इमारत, नहर, कुआं, नदी, नाले, कार स्कूटर, जहाज, तोप, रेल, स्कूल, कॉलेज, हास्पिटल, आदि सब इमारतें और संसाधनों को देश के निर्माण कर्ता मजदूरों ने बनाया ।

कुछ लोग देश के लिए हल जोतकर बीज बोकर, फसल उगाकर, अनाज, फल, दाल औशधी आदि खाद्य वस्तुओं से पूरे देश को भोजन व औशधी प्रदान करते हैं।

कुछ लोग जब आपसी मनमुटाव होते हैं झगड़े होते हैं कुछ गलत होता है तो उसे सुधारने का प्रयास करते हैं जैसे सरपंच, मुखिया, न्यायपालिका द्वारा आदि।

कुछ लोग है जो देश के मार्गदर्शन का काम कर रहे हैं देश का नेतृत्व कर रहे हैं जैसे देश के नेता। कोई मजदूरों को, रक्षा सैनिकों को, व्यापार को, न्याय को आदि हर क्षेत्र में नेतृत्व कर रहे हैं।

हर व्यक्ति राश्ट्र या दुनिया में कुछ न कुछ काम कर रहा है कुछ न कुछ लाभ पाने के लिए।

लेकिन आज के अनुरूप हम देखें तो ये सब करना आसान नहीं है।

मजदूर पूरे जीवन अपने जीवन यापन करने के लिए मजदूरी करता–करता गाड़ी तक नहीं खरीद पाता
300*12108000 वार्शिक
हमारी आधारभूत समस्याओं का समाधान अभी आजादी के 70 वर्शों बाद तक नहीं हुआ है।
रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पानी, सड़के स्वास्थ्य परिवहन, भ्रश्टाचार, रोजगार, व्यापार, राजनैतिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, अनुंसांधनिक, शिक्षा, संस्कार, इतिहास, संस्कृति, भाशा, देशभक्तों को सम्मान ।
दैनिक जरूरतें– भोजन, वस्त्र, घर, बर्तन, बिस्तर, बिजली, पानी,

भोजन– रोटी, दरूध , घी, पानी, बर्तन, चुल्हा, मसाले, मिर्च, सब्जियों, गेहूं, दाले, साबुन, बर्तनबार, रसोईघर, ईंधन लकड़ी, कोयला, गैस, पैट्रोल, सरसों आदि तेल

वस्त्र– गर्मी सर्दी, ब्याह–शादी, उपहार, बिस्तर जुते, चप्पल
पिछले तीन–चार वर्शों से भयंकर मंदी की दशा हम झेल रहे हैं। कहीं रोजगार नहीं है पैसा नहीं है अर्थव्यवस्था डामाडोल हो चुकी है।

राष्ट्र

सरकारी गरीबी की परिभाशाएं–

हरियाणा सरकार

<u>गैस, मोबाईल, टी वी, फ्रीज आदि ग्यारह उपकरण</u>

<u>जहां है वो गरीब नहीं है।</u>

गरीबी का आंकड़ा संख्या कम दर्शाने के लिए सरकार गरीबी की अलग–2 परिभाशाएं बनाती हैं।

समान वेतन आय नहीं है–

एक सरकारी कडंक्टर, चपरासी, कर्लक, डॉक्टर, नर्स आदि का वेतन अत्याधिक है। वही एक निजी कडंक्टर, चपरासी, कर्लक, डॉक्टर, नर्स आदि का वेतन बहूत कम है।

एम.पी, एम.एल.ए, और सरकारी कर्मचारी को सरकारी खजाने से स्वास्थ्य आदि में धन की जरूरत है और गरीब को नहीं। बावजूद उनकी आय मजदूरों से ज्यादा है। मजदूरों के पास भले ही पेट भरने के लिए भी न हो।

गरीब लोग

अर्जुन सेन गुप्ता आयोग– 121 करोड भारतवासियों में 84 करोड लोग हैं जिनके पास खर्च करने के लिए 20 रूपये नहीं हैं।

साढे 4 करोड इतने भयंकर गरीब हैं कि एक दिन में खर्च करने के लिए 50 पैसे नहीं है।

10 करोड लोगो के पास 1 रूपया नही है, प्रतिदिन खर्च करने को।

बजट वर्ष 2016 से 2017

इस एक वर्ष में हर भारतिय ने 17000 रूपये से अधिक कर दिया।

चार सदस्य वाले हर एक परिवार ने 68000 रूपये से अधिक कर दिया।

अगर कर 10 प्रतिशत मानका चलें तब परिवार की आय होगी

68000 रूपये गुणा 10 = 6 लाख 80 हजार रूपये सालाना

68000 रूपये * 10 % = 6 लाख 80 हजार रूपये सालाना

6 लाख 80 हजार रूपये सालाना हर एक परिवार की आय है।

सरकार का टैक्स सिस्टम– राजीव गांधी– 1 रुपए 15 पैसे

राष्ट्र

आधुनिक शिक्षा से रोजगार संभव नहीं
केवल आय कंपनी में जाकर उनके नौकर बन सकते हैं।

सामान्य जानकारी– आस–पास क्षेत्र, रोजगार, विरासत, व्यापार, संस्कृति, इतिहास, संसाधन, उद्योग, राजनीति, सुरक्षा, स्वास्थ्य

कानूनी समस्याएं– कानून अगर किसी सरकारी कागजात पर कोई लिखित रूप में वंश के बारे में कोई प्रूफ न हो तो सरकार हमें हमारे वंश की औलाद मानने को तैयार नहीं है।

कंपनी की लूट और अधिकार व व्यापार के लाईसेंस–

कुरकुरे बेचने अमेरिका की कंपनी आती है। दाल बेचने आती है। खुद के यहां होता नहीं लेकिन मेरे देश में धड़ल्ले से बेच रही है विदेशी कंपनियां।

जिनकी देश को जरूरत नहीं है ऐसे लाईसेंस विदेशों को।

क्या हम कुरकुरे बनाने में सक्षम नहीं या अन्य जैसे कोल ड्रिंक नहीं बना सकते ?

सैंट्रलाईजेशन–

कंपनी का आकार मजदूर और किसान–

राष्ट्र

कंपनी का आकार मजदूर और किसान–

1 दैनिक उपयोग के क्षेत्र में–
2 दवा के क्षेत्र में–
3 खाद, किटनाशक, दवांए, व उपकरण
4 रासायनिक पदार्थों के उत्पादन में–
5 मोटर गाड़ी के उपकरण उत्पादन के क्षेत्र में–
6 भारी इलेक्ट्रॉनिक सामान बनाने में –
7 सैनिक रक्षा सामग्री –
8 फूड प्रोसेसिंग, पलांटेशन–
9 वैज्ञानिक रक्षा अनुसंधान–
10 सीमेंट–
11 तेल शोधन व उत्पादन क्षेत्र में–
12 धातु खनन तथा निश्कर्शण–
13 जूट उद्योग में–
14 सिले हुए रेडिमेड कपड़े बनाने में–
15 जुते व अन्य खेल के सामानों में–
16 रबड़ उद्योग –
17 बच्चों के खिलौने प्लास्टिक–

सिद्धांन्त

अगर हम कोई भी कार्य करें तो वो विज्ञान के सिद्वान्तों पर आधारित हो जिससे कि उसको हजार करोड़ या अरबों वर्ष बीत जाने पर भी बदलने की जरूरत न पड़े। अर्थात् वो किसी के लिए भी हानि दाता न हों। उनमें कभी बदलावों को करने की जरूरत न हो।

व्यवस्थाएं

क्या होगा जब बड़े निर्माता कार्य या बड़ी तरह की व्यवस्थाएं और बहुत जयादा संख्या में कामगारों की जरूरत होगी। तब ये व्यवस्थएं दान आधारित तंत्र में कैसे चलेगी।

1 बैंक नहीं
2 मजदूर नहीं
3 ठेकेदार नहीं
4 व्यक्तिगत बड़ी परियोजनाओं का अभ्यास नहीं
5 बड़ी परियोजना के लिए धन नहीं।
6 कुछ बड़ी योजनाएं नही ंतो देश का संपर्क और दुनिया में आत्म–सम्मान को ठेस पहुंचेगी।

उद्योग स्थापना

1 शिक्षा के बाद विवाह जब होगा तब घर का लगभग 70 प्रतिशत सामान या जरूरी वस्तुएं तो हमें हमारे परिवार, मित्रगण व संबंधीगण आदि देंगे।

2 घर हम हर तरह से संपन्न व नया उद्योग निर्माण आने वाले 10 से 12 वर्ष में कर लेंगे,
उसके बाद बच्चे युवा हो जाएंगे तब तक हम नया घर बनाकर उनके अनुसार नयी तकनीक वाला हो, उनको देंगे और स्वयं वृद्धावस्था में निवास करेंगे।

दान पात्र

हमें स्तर आधारित दान आबंटन करना होगा,

1 ग्राम,
2 खण्ड,
3 जिला,
4 राज्य,
5 देश,
6 अंतर्राष्ट्रीय स्तर।

दानकर्ता अपने विचार के अनुसार ही दान करेगा, वह जिस स्तर के लिए जितनी इच्छा हो वह दान करेगा ।

जितना भी हमारा धन है वे अलग–अलग जगह छोटे–छोटे टूकड़ों में प्रत्येक जिला व नीचे स्तर में उपस्थित रहेगा।

देश के केन्द्र में राजा और कुछ व्यवस्थाएं रहेंगी व कुछ सुरक्षा न कि सारा धन।

न कि धन या संसाधन का बहुत बड़ा भण्डार जिस पर कि राजा राज्य करे।

संपर्क प्रणाली

जो हमारा दूरसंचार माध्यम है वो हमारा क्षेत्र होगा। कोई भी व्यक्ति या तार इसको आपस में नहीं जोड़ेगा।

ये दो तरह से संचालित होगी

1 एक तो उपग्रह प्रणाली से

2 आपसी तालमेल से

अब हर गांव में जो दान आदि से धन आयेगा उस पर इसकी चालन व्यवस्था की जिम्मेदारी होगी।

इसमें एक टावर लगेगा जो 5 से 6 किलोमीटर तक की बेहतरीन व नेटवर्क की अत्याधिक गुणवत्ता की संचार वाली प्रणाली देता है। लेकिन हम जो सुविधा लेकर आन चाहते हैं वो इससे कई हजार गुणा ज्यादा तेज व हजारों अलग–अलग तरह की सुविधाएं देने वाली होंगी। लेकिन पर्यावरण व प्राणी के लिए घातक नही होगी।

इसी टॉवर से सब यंत्र संचालित होंगे टीवी, मोबाईल, कंप्युटर, व्यापार , शिक्षा, स्वास्थाएं, तकनीकी व इंटरनेट आदि।

इसी टावर से संचालित राजा के घर एक सरवर लगा होगा जो हर तरह के डाटा को स्टोर रखेगा।

इसके साथ–साथ एक अलग से संयत्र होगा जिसमें प्रतिदिन डाटा ऑफलाईन सेव हो जाएगा इस स्टोरेज संयत्र में स्वचालित प्रतिलिपि मिटाने और उसके स्थान को कम करने व गुणवत्ता आधारित चीज स्टोर करने की क्षमता होगी
इसकेसाथ–साथ जो बदलाव हुए हैं उनकी पहले की स्थिति का हर साल का ब्यौरा रखा जाएगा।

अब जो व्यक्तिगत डाटा होगा वो हर व्यक्ति अपने पास रखेगा।

और जो विशेश व्यक्ति विचार, कला, तकनीकी आदि होगी उसे गांव के इस सरवर पर रखा जाएगा। पहले उसे सरपंच या राजा आदि मान्ल्यता देंगे।

उसके बाद डाटा स्टोर करने के तीन स्तर होगे ग्रांम, जिला, राज्य व देश।

हमकितना भी तकनीकी में आगे निकल जाएं लेकिन हमारी जो भाशा है उसमें तकनीकी आदि हमारी मातृभाशा कन्नड़, तेलगु, मराठी, आदि में ही सरवर पर अपलोड की जाए (अल्पभाशा) में वरना देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ होगा।

राश्ट्र भाशा सीख कर तो कोई भी हमारे देश की तकनीकी चुरा सकता है।

विदेशी भाशा में हो तो हम गुलाम हो जाएंगे।
संस्कृत में हो तब हमारे राश्ट्र को कोई भी नहीं तोड़ सकता। हिन्दी राश्ट्र भाशा को सीख कर हमारी तकनीकी चौरी होगी नई विकसित नहीं कर सकते।
भाशा का एक विशेश कन्वर्टर लगा होगा जो तेलगू को गुजराती व गुजराती को अन्य भाशा में बदल सकेगा। लेकिन ऐसा कोई कन्वर्टर नहीं होगा जो हिन्दी या संस्कृत को अन्य भाशा में ट्रांसलेट कर सके। ये केवल शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थी विवके के आधार पर होगी। हर साल का ब्यौरा रखा जाएगा।

अब जो व्यक्तिगत डाटा होगा वो हर व्यक्ति अपने पास रखेगा।

और जो विशेश व्यक्ति विचार, कला, तकनीकी आदि होगी उसे गांव के इस सरवर पर रखा जाएगा। पहले उसे सरपंच या राजा आदि मान्ल्यता देंगे।

उसके बाद डाटा स्टोर करने के तीन स्तर होगे ग्रांम, जिला, राज्य व देश।

हमकितना भी तकनीकी में आगे निकल जाएं लेकिन हमारी जो भाशा है उसमें तकनीकी आदि हमारी मातृभाशा कन्नड़, तेलगु, मराठी, आदि में ही सरवर पर अपलोड की जाए (अल्पभाशा) में वरना देश की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ होगा।

राश्ट्र भाशा सीख कर तो कोई भी हमारे देश की तकनीकी चुरा सकता है।

विदेशी भाशा में हो तो हम गुलाम हो जाएंगे।
संस्कृत में हो तब हमारे राश्ट्र को कोई भी नहीं तोड़ सकता। हिन्दी राश्ट्र भाशा को सीख कर हमारी तकनीकी चौरी होगी नई विकसित नहीं कर सकते।
भाशा का एक विशेश कन्वर्टर लगा होगा जो तेलगू को गुजराती व गुजराती को अन्य भाशा में बदल सकेगा। लेकिन ऐसा कोई कन्वर्टर नहीं होगा जो हिन्दी या संस्कृत को अन्य भाशा में ट्रांसलेट कर सके। ये केवल शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थी विवके के आधार पर होगी।

पथ एवम यात आयात

क्योंकि हमें रोजगार देना है इसलिए किसी एक व्यक्ति या कंपनी के नीचे का या राश्ट्र असससाति करों तब भी हानि ही होगी।

ट्रेने या जहाज हवाई या समुद्री ये सब जिला स्तर पर आधारित हों।
जहाज या ट्रेन बनाने से लेकर प्रबंधन तक सब कुछ।

केवल कंट्रोल राजा या देशीय स्तर पर हो।
मैं यहां रेल या जहाल आदि का संबंध मालवाहक सेवाओं के आधार पर सुनिश्चित करना चाहता हँ व्यक्ति स्वयं अगर कहीं जा रहा है तो उसको ऐसी व्यवस्था होने पर कुछ मर्क नहीं पड़ेगा कि रेल या जहाज है या नहीं।
जब रेल और जहाज जैसे यातायात वाहनों को हम प्रत्येक जिलें में उत्पादन कर रहे हैं तो आप ये कल्पना किजिए कि हमें माल क्या ढ़ोना पड़ेगा।
जवाब है – कुछ भी नहीं।
हमें एक जिलें से दूसरे जिले या राज्य में कुछ भी माल ढ़ोने की जरूरत नहीं होगी।
हमें जो करना होगा वो केवल ये कि माल विदेशों में कैसे भेजा जाए।

गोबर गैस एक बहुत बड़ा व्यापार है इसके लिए पाईपलाइन विकसित करेंगे।
इसका जरिया स्थलीय रास्ता या सामुद्रिक दोनों हो सकते हैं।
इसका अपार भण्डार हमारे पास हो जाएगा। ऐसे में हमें कई देशों में स्टोक व स्टोरेज हाऊस भी लगाने पड़ेगें ।
क्योंकि कृशि व पशुधन के अलावा हमारे पास दूसरी ऐसी कोई ताकत नहीं है जिसको हम सारी जिंदगी धड़ल्ले से बेच सकें। (जिंदगी–पृथ्वी की उम्र)

पथ एवम यात आयात

ट्रेन, वायुयान आदि केवल जिला स्तर पर रखी जाए।

ळर गांव में जब ट्रांपोर्ट की सुविधा व्यक्तिगत होगी तब जिले में कोई भी काल आसानी से पहुंचाया जा सकता है। इसमें कोई रेल, ट्रेन आदि की आवश्यकता नहीं है।

रेल और वायुयान आपस में व बस स्टेंड आदि सब आपस में जुड़े होंगे।

10 बड़े उद्योगों का माल आपस में माल आदि के रूप में केवल जिले में ढोया जाएगा जिले से बाहर नहीं।

कुछ संसाधन जैसे लोहा, सोना, तांबा, ठण्डे व गर्म प्रदेशों के फल सब्जियां, औशधियां आदि पूरे देश में ए स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने के लिए ट्रेन आदि की जयरत है।

लेकिन गैस, कोयला, पैट्रोल या कोई भी ऐसा प्राकृतिक संसाधन जो हमारे जरूरत नहीं है ओर हम उसे ढ़ोए वो अपराध होगा।

व्यापार के लिए कुछ उत्पादन करना ाी जरूरी है। हर जिले में 200 से 300 गांव है।

ळर गांव में 10 बड़े उद्योग ाी स्थापित करने होंगे। ये उद्योग वो सब चीजें बनाएंगे जो 5 से 10 व्यक्तियों के लिए बनाना सीाव नहीं है। यहां 40 से 50 वयक्ति ऐसे काम करेंगे जो बहुत ही कार्य अनुभव के साथ गतिशील हो तथा आवश्यक ज्ञान हो।

टब ये जो 500 व्यक्ति हर गांव में आएंगे वो दिल्ली, बम्बई, लुधियाना जैसे महानगरों से आएंगे जहां भीड़ बहुत ज्यादा है, खर्च बहुत ज्यादा है।

दिल्ली और बम्बई जैसे महानगरों को खत्म करने से हमारा अरबों खरबों की धनराशि में बचत होगी और लगभग देश की आधी से जयादा गरीबी उसी धन से हटाई जाएगी।

पथ एवम यात आयात

यातायात की 90 प्रतिशत जरूरत हमें नहीं रहेगी केवल 10 प्रतिशत रह जाएगी और विदेशी यातायात में कुछ गुणाा वृद्धि होगी।

देश में व्यापार के बाद फिर केवल भ्रमण या रिश्तेदारी आदि में जाने वाले लोग ही बचेंगे।

सबसे ज्यादा यातायात स्कूल, कॉलेज, काम ढुलाई आदि का है जो सर्वथा खत्म हो जाएगा।

हर जिले में बस स्टैंड, ट्रक स्टैंड, हवाई अड्डा व रेलवे स्टेशन आदि होंगे।

व इसके चारों और गोलाकार स्थिति में जितने भी हमारे उद्योग धन्धे होंगे उनके स्टोक हाऊस होगे इन्हीं स्टॅाक हाऊस में हमारे रिसर्च सेंटर होगें जहां सबसे उत्तम कारीगर बैठेंगे और अनुसंधान करेंगे।

यही वैज्ञानिक ओर मंत्रीगण होंगे।

यहीं पर प्रत्येक जिले में सबसे उत्तम जो कारीगर है या खोजबीन कर्त्ता है, शोधकर्ता है, वैज्ञानिक है जो राज्य स्तर के है। प्रत्येक जिले में 15 से 20 बड़े उद्योग व रिसर्च सेंटर होंगे।

ठसी जिले में भारत का सबसे बड़ा अनुसंधान केन्द्र होगा जिसकी संख्या 3 या 4 भी हो सकती है।

दर्शन

इसी तरह अनेक प्रकार की वैज्ञानिक आधरीूत परीााशाएं वेदों ओरउनके उपवेदों में निहीत है लेकिन उनमें से एक भी परिभाशा ऐसी नहीं है कि जिसमें कोई भी बदलाव होसके। वो संपूर्ण है।
माने कि वेद विज्ञान है किस प्रकार का विज्ञान है उनमें से बहुत ही अति बुद्धिजीवी है वैाानिकों के द्वारा लिखी पुस्तकों ओर रचनाओं के आधारपर हम ये समण्ने की कोशिश करेंगे।

महर्शि मनु–

इन्होंने मनुस्मृति लिखी है। शब्दों से ही स्पश्ट है कि इनको जो याद था उसी में से कुछ न कुछ लिखा गया है। और लिखा गया है वो ये–

वेद	ब्रहामण ग्रंथ	वैदिक उपांग	वैदिक अंग
ऋगवेद	एतरिय	1 मीमांसा	1 शिक्षा
अर्थवेद		2 वेदान्त	2 कल्प
यजुर्वेद	शतपथ	3 न्याय	3 व्याकरण
धनुर्वेद		4 वैभेशिक	4 निरूक्त
समवेद	ताण्डय ब्रहामण	5 सांख्य	5 छंद
गंधर्ववेद		6 योग	6 ज्योतिष
अर्थवेद	गोपथ		
आयुर्वेद			

उपनिशद

ईश, केन, कंठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैतरिय, ऐतरेय, श्वेताश्वतर, छन्दोग्य, बृहदारण्मक।

दर्शन

अब आधुनिकता के आधार पर मेरी व्यथ को समझाने की प्रयत्न करें।

मोबाईल फोन या कंप्युटर के अन्दर एक मेमोरी या स्मृति होती है जिसमें हम यदि भजन भरते है तो वो भजन ही चलाता है और आती या तस्वीर भरते हैं तो वो आरती या तस्वीर ही दर्शाता है लेकिन स्वयं को कुछ नहीं बना सकती कोई विचार नहीं कर सकती ये विचार करने की क्षमता मनुश्य अपने विवके के आधार पर करता है। इसलिए केवल आपने या हमने जितना समझा, सोचा देखा, महसूस किया, केवल उतना ही हम और आप समझ पायेंगे लेकिन हर तरह से संपूर्ण बहम को समझना जरूरी है। क्योंकि हम ब्रहम में है। और ब्रहम हम में है तो ये समझना भी मुश्किल नहीं है माने कि सर्वसव समझना अत्यंत सरल है ओर वो हम में ही निहीत है समाया हुआ है।

ब्रहम– इसमें सर्वस्व आ जाता है कैसे ?

मैं मनुश्य हूं, मुझसे बड़ा गांव है, गांव से बड़ा शहर है, शहर से बड़ा जिला और जिले से बड़ा राज्य, राज्य से बड़ा देश, देश से बड़ा महाद्वीप और उससे बड़ी पृथ्वी, पृथ्वी से बड़ा सोर मंडल ओर सौरमण्डल से बड़ी आकाश गांगा, आकाश गंगा से भी तो बड़ा कुछ न कुछ है ये तो मैं नहीं जानता आप तो जानते हैं या आप और हम नहीं जानते तो इतना तो जानते हैं कि आकाश गंगा से तो अनेकों अनेक बड़ी वस्तुएं या कुछ ओर है जिसके बारे में हम नहीं जानते ये ब्रहम है सबसे बड़ा जिसका कोई अन्त नहीं है और बड़ी हो सकता है। ये ब्रहम ह ैअब ये तो साबित हो गया कि मैं ब्रहम में हूं मुण्में ब्रहम कैसे है अब चलते हैं इसकी ओर– उससे छोटा चूहा है चूहे से छोटी चीटी है और उससे छोटे जीवाणु–कृमि आदि हैं उससे छोटा कुछ है लेकिन ये हम और आप नीं जानते कि उससे छोटा क्या है लेकिन ये जरूर जानते हैं कि कुछ न कुछ तो है जो उससे भी छोटा है और सबसे बड़ा भी कोई भी नहीं है जो सबसे छोटा है वो भी ब्रहम है और जो सबसे बड़ा है वो भी ब्रहम है।

मैं केवल इतना ही लिखने और समझने में सहमत हूं जिनका कि मैं समझ पाया हूं और जितनी मैंनें दुनिया देखी उससे जयादा नहीं। ओर उतना ही आप सीख ओर समझ सकते हैं। जितना कि आपका विवके ओर उपलब्धता है।

केवल बुद्धि के साथ आप र्निय न करें उसके साथ–साथ विवके का ाी प्रयोग करें। वुद्धि ओर विवके में मेरा विचार कया है ये मैं स्पश्ट करना चाहता हूं।

एक भैंस को रास्ता घर से तालाब तक का मालूम है और वो हर दिन उसी पथ से आती है ओर चली जाती है एक दिन क्या हुआ कि किसी की फसल पैदा हुई ओर उसने फसल बेचकर लकड़ी अपने घर में संचय करने के लिए घर के दरवाजे के आगे रख दी ओर जो सारीा रस्ता था वो लकड़ी रखे होने के कारण बंद हो गया तब वो भैंस विचलित हो गई। इधर–उधर दौड़ती रही लेकिन जस घर या तालाब में उसको जाना था वह नहीं पहुंच सकी। क्योंकि उसके पास स्वयं से फैसला लेने की क्षमता, विचार, करने की क्षमता और जो जानकारी का भण्डारण माने कि मानचित्र ग्राम सड़कों का उसके पास नहीं था। लेकिन एक विवेकहीन मनुश्य के पास दूसरे रास्ते की जानकारी या वो विवके होता जिसके आधार र वो घर या तालाब जा सकती है।

इसलिए बुद्धि केवल एक स्कृति (चिप, मैमोरी कार्ड) है और विवके फैसले लेने और कुछ नया या सत्य असत्य निध्ररण करने की क्षमता है।

तो इससे ये सिद्ध होता है कि मैं ब्रहम हूं और ब्रहम में भी हूं और मुझमें भी ब्रहमा है।

इसलिए ये गलती या कमी या दोश हमारा है कि हमारे शरीर के भीतर या बाहर कोई रोग या दोश है तो हम उसका निवारण या अपचार नहीं जानते क्योंकि हम डॉक्टर नहीं है। लेकिन शरीर तो हमारा ही है जो पीड़ित है। लेकिन फिर ाी हमन तो अपने बारे में जानते हैं न ही अपने से बाहर के बारे में।

तो ये जो अभाव है वो हमारी बुद्धि के कारण है लेकिन विवके ये कहता है कि डॉक्टर या वैद्य इसका उपचार कर सकते हैं या तो पुस्तक, लौहार, चमार, कुम्हार, राजा, सैनिक, तुम्हे इस दुख से आजाद करवा सकता है।

समय–काल–ब्रहम में तो सब कुछ है लेकिन ये कब से है और कब तक रहेगा अब इसकी कल्पना करते हैं जैसे घी से पहले मक्खन बना, मक्खन से पहले दही ओर दही से पहले दूध था दूध से पहले वो किसी जीव के शरीर में था और शरीर न जाने किस–किस वस्तु से मिलकर बना ओर न जाने कितना समय लगा होगा। आगे घी का न जाने क्या–क्या बनने वाला है। अगर कोई न हिले ढूले तो तब समय भी न बदले क्योंकि जब कोई चीज के अन्दर वाइब्रेशन होती है तभी दो चीजें आपस में मिलती है गुजंन होता है तब झंकार पैदा होती है ओर आपसी संलयन ओर विखण्डन से एक नया स्वरू॰ पैदा होता है। ये जो मूल वाईब्रेशन है उसका नाम औउ्म है

अब था तो दूध ही लेकिन रूप अलग हो गया ओर वो दही बन गया लेकिन अब वे दूध का रुप छोड़कर, दूध, नामक शरीर छोड़कर जो आत्मा है वो दही में बदल गया ब जो आत्मा है वो दही में है लेकिन आत्मा नहीं है रुप बदल गया। लेकिन कुछ अवधि लगी ये अवधि लगी है क्षण जो लगे, पल जो लगे वो समय है।

परमात्मा– बीज बोया गया जमीन में पानी प्रकाश आदि मिला तो समय के साथ क्रिया हुई ओर जो बीज की आत्मा थी वो पौधे में बदल गई, पौधे से टहनियां पत्ते आदि बने फिर फल बने। फलों में से फिर बीज निकला और जो ये बीज निकला वो फिर से जमीन में गया। लेकिन बीज तो हमारे पास एक ही था उसमें से इतने सारे फल निकले ओर एक ही आत्मा की अनेक आत्माएं कैसे हो गई।

जब एक अलग रुप हमें दिखाई दे उसको हम एक आत्मा की अवधारणा देते हैं जैसे पड़े, जल, अमरूद आदि लेकिन वो जब मिट्टी में मिट्टी जलकर राख हो गए, या जनकर धुल हो गए या फिर हम कहते हैं कि वो पंचतत्व में विलीन हो गए। वास्तव में हम उसी पंचतत्व का एक अंश हैं जो बार–बार नए स्वरुपों में बदलता रहता है। हम एक होते हुए भी अलग हैं ओर अलग–अलग होते हुए भी एक हैं। जो ये एकत्तव है वो परमात्मा है। आत्मा परमात्मा में विलय करती है ओर उसी में से विखण्डीत होती है।

दर्शन

न्याय
वैभेशिक
सांख्य
योग
उपनिशद– श्रुतियां
स्मृति
गीता– सांख्ययोग का मुख्य ग्रन्थ
व्यासभाश्य
भोजवृति
योगवार्तिक– विज्ञान भिक्षु (लेखक)
तत्व वैभाखी– भाश्य– वाचस्पतिमिश्र लेखक
अश्टांगयोग
साधनपाद
सांख्य तत्वसमास
सांख्य योग सागर

लेखक	पुस्तक	वर्णन विशय
जैमिनि	पूर्व मिमांसा	वैदिक कर्मकाण्ड व ज्ञान काण्ड युद्ध
व्यास	उत्तर मीमांसा	

वैज्ञानिक

मनु, कणाद, पाराशर, सुरपाला, सुशेण, चरक, सुश्रुत, वाड़ंग्भट्ट, नागार्जून, नारद, भृगु, आर्यभट्ट, लीलावती, भास्कराचार्य, वाल्मिकी, विदुर, वेदव्यास, चाणक्य, पतंजलि, पाणिनि, भरतमुनि, वात्स्यायन, शुक्राचार्य, सुरपाला, तिरुवल्लुवर, दयानंद।

विज्ञान

वेद, उपनिशद, पुराण, सांख्य दर्शन, ज्योतिश, कामसुत्र, व्याकरण, भवन भास्कर, रसतंत्रसार, भिवंतुक्लपम्।

खेल

खेलों में बच्चों को योग प्राणायाम आदि नहीं करना चाहिए क्योंकि बच्चों में कफ अधिक होता है ओर वो बिमार हो जाएंगोबच्चों के लिए जी भर कर सोने, नींद लेना व शरीर के विशेष अंग जैसे छाती, कान, सिर, पैर आदि व पूरे शरीर पर तेल की मालिश करना अत्यंत आवश्यक है।

यही उनके शरीर को अधिक स्वस्थ रख्ेगा। लेकिन चंचलता और वैज्ञािनक विचारधारा व अत्याधिक सीखने, समझने व विचार करने की विवेकशिलता व याददाशत (स्मृति) बच्चों की कई गुणा अधिक होती है। लड़कियों की 16 वर्ष व लड़कों की 24 वर्ष तक ये सोचने समझने और कल्पना करने की शक्ति अधिक होती है। जिसकी हम युवा या बुजुर्ग कल्पना नहीं कर सकते।

बच्चों को हल्की, कुश्ती, कब्बडी, खो-खो, फूटबाल, बैडमिंटन, गेंद कृष्ण वाली आदि ये सब सीखाना चाहए। ये सभी खेल खेलने में सक्षम हों।

ये जरूरी नहीं है कि बच्चे ये खेल सीखें परन्तु अब जो लिख रहा हूं वो अत्यंत आवश्यक है-

चौर सिपाही- ज्ञानी चौर- एक चौर कैसे चोरी करता है, क्या चोरी करता है, कब कहां कैसे क्यों छिपेगा, कहां, कितनी दूर पहुंचा होगा। हमारे कितने सिपाही आगे हैं हमसे चोर बलवान है बुद्धिमान है आदि-आदि कल्पनाएं-

फिर हमारा सुरक्ष तंत्र क्या है-हमें कैसे उसको, पकड़ने की योजना बनानी है कितने हम सुरक्षाकर्मी हैं, नागरिकों का क्या दायित्व है आदि-आदि हजारों तथ्य खेल में जो (तत्कालीन) वर्तमान हमारा तंत्र रहेगा उसको शमिल किया जाए।

- न्याय:- जब कोई झूठ बोलता है या अपराध कर देता है छल कपट करता है तब राजा हरिशचंद्र की तरह तुरंत न्याय करने वाले खेल सिखाएं-

सेवा भाव:- भूकम्प, हादसा, मृत्यु, आदि पर कैसे सांत्वना व क्या क्या घरेलू कार्य, भोजन आदि रिश्तेदारों से संपर्क, सुरक्षा की गुहार परिवार संभालना, समझा-बुझा कर यकीन दिलाकर मानसिक स्थिति को संभालना आदि बच्चों को सिखाया जाए।

जैसे श्रवण कुमार, एक सैनिक की मां आदि-आदि।

- युद्ध:- देश या गांव, या शहर में यदि कोई हमला होता है तब कैसे योजना बनानी है, कैसे दुश्मनों का पता लगाना है, कैसे अकेले या कुछ नागरीकों को दुश्मनों से लड़ना है, विदेश नीति, रक्षा नीति, मित्र-शत्रु राज्य नीति आदि की सब बातें सिखाई जाएं।

सुरक्षा के लिए उपयोग होने वाले हथियार आदि या बिना हथियार संरक्षण

देश के नागरीक बच्चे, बूढ़े, स्त्री आदि, देश की तकनीकी खोज-मिशाइल, चिप, सोफ्टवेयर आदि, देश की धन संपदा, देश की पुस्तकें ऋषियों का ज्ञान, देश के जीव भैंस शेर चिता आदि उनकी रक्षा कैसे करनी है। जैसे बिश्नोई समाज पेड़ों की, आजाद ने ट्रेन लूटकर, सुभाष चंद्र बोस ने सेना बनाकर, दयानंद ने 1857 की क्रान्ति करके, रानी लक्ष्मी बाई ने राजव्यवस्था व युद्ध करके, कितुर निन्नमा, तात्यां टोपे विदुर गांव या कस्बे को पूरी की पूरी जनसंख्या को अंग्रेजों ने मार डाला लेकिन फिर भी हमने युद्ध किया।

संधि करे, समझोता करके, महाराणा प्रताप की तरह बलवान होकर। आदि सब क्रांतिकारीयों से औत-प्रोत खेल व संस्कृति व शहीदों का ज्ञान महापुरूषों का ज्ञान खेल-खेल में दे दे व रणनीति भी सिखला दें।

खेल

तकनीकी संरक्षण:- जैसे राजीव दीक्षित वैज्ञानिक ने, व भारत के महान ऋषियों ने रातों-रात पढ़कर भारतीय वेद और ज्ञान को अपने दिमाग में रटकर, याद रख कर पुस्तकों को जलाकर भी ज्ञान की रक्षा की।
तकनीक को सीख कर कहां दुपाना है कैसे छुपाना है ऐसी कुटनीति भी खेल में सीखा दें।

धर्म की रक्षा- महाराणा प्रताप की तरह जंगलों में भूखे रहकर, सिखों की तरह बच्चों की कुर्बानियां देक, हाथों में कंगन पहन कर गोबिन्द सिंह जी की तर, बाबा दीप सिंह जी की तरह शीश काटकर भी युद्ध लड़ना, रानी पद्मावती की तरह गर्दन दान देकर युद्ध के लिए प्रेरित करना, भगत सिंह की तरह केश कटवाकर भी धर्म की रक्ष करना, आजाद की तरह लूट कर भी देश की रक्षा करना, चाणक्य की तरह बिना हथियार उठाए केवल ज्ञान से जीत लेना।

नेतृत्व- देश की गरीबी, भूखमरी, रोजगार, अकाल आदि की स्थिति में राजा कुरू की तरह हल चलाकर देश सेवा, महाराज शिवि की तरह पशु पक्षी रक्षा के लिए कबूतर के बदले शरीर अंग दान देकर। राजा भोज की तरह दानी बनकर

मातृपितृ धर्म- श्रवण की तरह माता पिता की सेवा कर राम की तरह माता की आज्ञा पालन कर्ण की तरह पूद्ध जीवित रहने का बलिदान, पति-पत्नी धर्म-राम की तरह मर्यादा, सती अनुसूया की तरह पवित्रता, सीता की तरह पत्नी धर्म।

चिकित्सा:- किसी भी असाध्य बिमारी का ईलाज करना सेषेण की तरह लक्ष्मण का घाव भरना चरक और सुश्रुत की तरह आयुर्वेद और सर्जरी करना। धनवंतरी के समानराजा दक्ष के समान अपने सिर कटने पर भी बकरी का सिर लगा लेना।शिव की तरह गणेश को हाथी का मस्तक लगा देना।इन्द्र, अश्विनि, कुमार गान्धर्व, सी वी रमन की तर पौधों में जीवन दर्पण घटना की स्थिति में क्या करना है- आदि-आदि सब खेल में सिखा देना

।व्यवहार- छोटे बड़, दादा-दादी, नाना-नानी, पति-पत्नी, भाई-बहन, भाई-भतीजा, बहनोई-आदिसब रिश्ते और उनकी अहमीयत्तावेश-भूषा:- लड़की के वस्त्र, पत्नी के वस्त्र, दादी के वस्त्र, राजस्थानी, हरियाणवी के वस्त्र, पुरूष के वस्त्र।

भाषा-व्यवहार:- बाता-बातों में सामने वाले को लूट लेना और बात करने व्यवहार निपुणता व चतुराई

दया-भावना:- सब जीवों के प्रति प्रकृति के प्रति मूर्ख और विद्वान के प्रति स्त्रियों के प्रति विशेष

लेन-देन:-

उपहार- कभी भी हम गुरू, बेटी, चिकित्सक के घर खाली हाथ नहीं जाते कभी भी इनको हम हमारे घर से बिना सम्मान के हम घर से जाने देते हैं। छोटे बड़े और बराबरी वालों को उपहार आदि।

खेल

उत्सव- तीज, दीपावली, होलिका, दशहरा, पूर्णमासी, अमावस्या, वासीड़ा, ग्यारस, निर्जला

व्रत-(उपवास)

उठने-बैठने:- सोने-दौड़ने-खाने-रहने-आदि सब का तरीका, समय, लाभ हानि, आदि सब सिखाएं।

जीव- गाय-भैंस, घोड़ा आदि से मिलने वाले पदार्थों का लाभ उनको व्यवस्थित करना औषधीय प्रयोग आदि सब कुछ सिखाएं

विवाह-गौत्र, रक्षा बंधन, जातकर्म, बच्चे का जन्म, शिक्षा, वृद्धा अवस्था, मृत्यु, संस्कार आदि सब सोलह संस्कार सब बच्चों (गर्भाधान को छोड़कर) को संपूर्ण विज्ञान आधारित तथ्यों के अनुसार विधिवत खेल-खेल में सिखा दें।

नाच-गाने:- मौसम के गीत, फसलों के गीत, गाय के गीत, तुलसी गंगा आदि प्रकृति के सब गीत बच्चों को सीखा दें।

खेल

2 से 5 वर्ष तक के बच्चे

ये बच्चे बोलना शुरू करेंगे और माता-पिता, दादा-दादी के साथ बाजार जाना शुरू करेंगे।

3-4-5 वर्ष के होंगे तब तक इनको घर पर ही शिक्षा, अक्षर माला, आदि लिखने-बोलने का ज्ञान माता-पिता द्वारा करवा देना चाहिए।

अब सिखाते हैं व्यापार और राष्ट्र जब ये आपके साथ जाएंगे तब बाजार से निकलेंगे बाजार में हर ज्ञाता या कामगार के पास उसके विशेष खिलौने रखे होंगे जिसको देखकर बच्चा, जिद करेगा कि मैं तो ये खिलौना लूंगा

अब- बच्चा बिजलि को दुकान से गुजरा तो खिलौना हो मोबाईल जैसा असलियत में चलने वाला सस्ता लेकिन असली टेलीविजन हो, तार हो, ऐंटीना हो आदि-आदि पंखा-असली चार्जहाने वाली जो बच्चों के टीवी पखें आदि वार के हिसाब से चलाएं।

-खादी की दुकान से गुजरेगा तब

-वस्त्र की दूकान से गुजरे तो वस्त्र खिलौने हों

बैलगाड़ी, खटिया, तख्त, बैंड आदि सब प्रकार के खिलौने हों।

-यातायात मकैनिक के समाने से गुजरे तो हो सके तो असली चलने वाली बाईक लेकिन छोटे खिलौने जैसी हो। कार चलने वाली आदिहो, तेल डलता हो लाईट आदि हो।हर प्रकार के व्यवसाय की एक बिडियों बनी हो।जैसे कृषि के बैल चलते हुए व बीज बौने पौधे उगाने फसल काटने आदि की विडियो बीजली या गाड़ी की विडीयो

इन सब से बच्चों को सब प्रकर के नाम और ज्ञान आ जाएगा।

अब साथ में बच्चों को ज्ञान देना दादा जी प्रणाम, मिस्त्री जी नमस्कार, वैघ जी राम-राम अदि। आदिसब रिश्तो-व्यापारियों से रोज उनको सैर के बहाने सिखला दें।अब वो पांच वर्ष के जब विद्यालय जाएंगे और 16 वर्ष के लौट कर आएंगे तो वैज्ञानिक ही बनेंगे।

चिकित्सा

अगर डॉक्टर आपरेशन कर रहा है तब छुट्टी पर जो डॉक्टर है उसके पास एक सिग्लन संदेश
डॉक्ैटर भेज दे कि अगर कुछ घटना हुई तो आपको जाना पड़ेगा
डॉक्टर संडास में गया है तब भी दस मिनट के लिए भी हल्की लाल घंटी का उपयोग करें।

नित्य 1

गुरूकुल समय निर्धारण

60 60 9 सर्वप्रथम एक घंटा संस्कृत भाषा90 30 2 आधा घंटा कंप्युटर मोबाईल व नेटवर्किंग120 30 3 अंग्रेजी भाषा15030 4 स्थानीय भाषा प्रादेशिक मातृभाषा व सभ्यता-संसाधन।180 30 5 जर्मन, चीनी, आदि एक जिले के 200 गुरूकुलों में 200 अलग अलग प्रकर की भाषाएं।210 30 6 हिन्दी भाषा7:00 60 खेल 8:00 60 सुबह खेलने के बाद संस्कृत9:00 30 उसके बाद कंप्युटर आदि लैब/ 15 मिनट9:30 45 9:30 के बाद भोजन 10:15 तक आराम आदि।10:15 45 कामगार शाला।11:00 30 हिन्दी भाषा तथा 15 मिनट अलग से11:30 30 स्थानीय भाषा 15 मिनट12:00 45 कामगार शाला12:45 45 कामगार शाला01:30 45 कामगार शाला02:15 45 कामगार शाला03:00 60 विश्राम04:00 45 विदेशी भाषा ज्ञान04:45 75 खेल प्रशिक्षण06:00 सांयकाल भोजन उपरांत विश्राम आदि।

7:00 8:00 60 पीटीआई (खेल)8:00 9:00 60 संस्कृत9:00 9:45 45 कंप्युटर आदि लैब (दैनिक उपयोगी) 9:45 10:30 45 भोजन आराम आदि।10:30 11:15 45 कामगार शाला।11:15 12:00 45 हिन्दी भाषा

12:00 12:45 45 स्थानीय मातृभाषा प्रादेशिक12:45 01:30 45 कामगार शाला01:30 02:15 45 कामगार शाला02:15 03:00 45 कामगार शाला3:00 04:00 60 विश्राम04:00 04:45 45 विदेशी भाषा04:45 06:00 75 खेल06:00 स्वतंत्र 60 भोजन07:00 08:00 60 अंग्रेजी भाषा

प्रात:काल5:00 से 07:00 स्नान, शौच, निवृत, आदि दातुन मालिस, व्यायाम आदि।

नित्य

भाषा 3 वर्ष तक 30 मिनट बच्चों को सिखाएं ओर 15 मिनट लिखने-पढ़ने को दें।

जब 8 वर्ष की आयु की चौथी कक्षा में बच्चे शब्द व पाठ अपने-आप स्वत: सीख जाने के बाद लिखना-पढ़ना बोलना और शब्दों को उसी भाषा में समझने लगेंगे तब उनको आगे उस देश या विषय की हर व्यवस्थ को आयु स्तर के अनुरूप समझाया जा सकता है। तब इस अवस्था में 15 मिनट तक बच्चों को पढ़ाएं और 30 मिनट तक उनसे सुनें, समझें संवादकरें, उनकी समस्याओं का समाधान करें।

जब किसी व्यक्ति से सवाल पूछा जाता है तब वो जवाब देने के लिए असमर्थ हो जाते हैं विचार शक्ति की आवश्यकता पड़ती है न कि किसी बात को विचार को रटने के लिए।

अगर आप चाहें कि हमें रात्री के समय अंग्रेजी विषय नहीं पढ़ाना है तब आप एक कामगार शाला को हटा कर इस विषय को पढ़ा सकते हैं।

बच्चे कफ प्रवृति के अधीन होने से कुछ गुण उनमें अत्याधिक होते हैं व कुछ अवगुण।

गुण- कफ प्रवृति के कारण यादाशत अत्याधिक होती है। कफ के कारण कल्पना शक्ति व विचार फैसले या नई चीजें खोजने की शक्ति भी अत्याधिक तीव्र होती है।

अवगुण- 1 ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती जाती है त्यों-त्यों सोने की नींद लेने की आदत कम करवाएं। जितना जयादा कफ उतनी ज्यादा नींद। जन्म से लेकर जवानी तक कफ का प्रभाव, जवानी से वृद्धावस्था तक पित्त और वृद्धावस्था में वात अत्याधिक हो जाता है। जन्म के समय अधिक फिर धीरे-धीरे नींद कम होती चली जाए। लेकिन नींद लेना अत्यंद आवश्यक भी है।सोते हुए बच्चे को नींद पूरी होने से पहले उठाना भी ठीक नहीं है।

2 योग-व्यायाम व प्राणायाम 12 वर्ष कन्या को और 15 वर्ष तक पुरूष को कभी न करवाएं। क्योंकि इस समय तक दोनों कफ के अधीन होते हैं। और शरीर की सप्तम धातु वीर्य व रज की उत्पति होना प्रारंभ नहीं हुई होती। बिल्कुल नहीं योग प्राणायाम।

3 कफ को शांत करने के लिए बच्चों के शरीर की तेल मालिश करना अत्यंत आवश्यक है।

सिर,पैर, हाथ, कान व विशेषकर छाती की।

क्योंकि छोती कफ प्रधान है हथेली पगथली छाती विशेष व उत्तरों उत्तर (एक के बाद एक) सिर, कान, पैर, हाथ इसके बाद पूरा शरीर प्रतिदिन मालिश करें तो बहुत लाभदायक होता है।

4 बच्चे जितना सकारात्म सोचते हैं, नाराज, गुस्सा, तंग, दुखी,उपहास, कठिन मेहनत आदि होने पर उतना ज्यादा नकारात्मक भी सोचते हैं। मतलब ये कि अगर उनकी सोच और विचार शक्ति नकारात्क हो जाए तो वो कोई भी जिद करसकते हैं, कोई भी हानि कर सकते हैं क्योंकि उनकी कफ की प्रकृति है। हठी होते हैं।

इस आयु में उनको अच्छे बुरे, भले का सकारात्मक-नकारात्मक आदि विचारधाराओं का या एकदम सही फैसले लेने का ज्ञान नहीं होता। उनका मन और दिमाग कच्चे मटके की तरह होता है। आप जैसा चाहे वैसा ही उन्हें ढ़ाल सकते हैं। आपचाहें तो मिट्टी से घट़ा, तवा, बर्तन दीपक, ईट जो चाहें वो बना लें।

लेकिन थोड्या सा पानी ज्यादा हो जाए तो वह बह जाती है। ज्यादा गर्मी हो जाए तो वा तपकर या तो उसकी ढ़ाल में बदलाव हो जाता है या उसकी सूरत ही बदल जाती है उसी तरह बच्चे का दिमाग भी मटके के समान ही होता है उसे जैसा चाहो वैसे ढ़ाला जा सकता है।

जैसे एक कच्चा घट़ा बनाकर पकाने में एक-एक पल का ध्यान रखना और स्थिति को संभालना आवश्यक है वैसे ही बच्चे की स्थिति को संभालना भी अत्यंत आवश्यक है। उसके चंचल मन व बुद्धि को सकारात्मक ज्ञान से भरकर ही उसे एक सभ्य इंसान बनाया जा सकता है नहीं तो वह भी मटके की तरह बिना ध्यान के भटक सकता है और बुरे प्रभाव में पड़ सकता है।

शिक्षा के साथ संस्कार सुरक्षा

बिना समय आए जेसे हम कच्ची फसल काट लें तो उसमें से न फल मिलता है, न बीज और न ही वो लाभ मिलेगा जिसके लिए हमने फसल बोई थी।

बीज अगर खराब होगा तो धरती कितनी भी उर्वरता वाली हो उपजाउ नहीं हो सकता है और उसमें से बीज अंकुर नहीं होगा। धरती अगर खराब हो गई तो बीज कितना भी उत्तम हो फसल नहीं हो सकती।

इसी तरह हमारे बेटे वो बीज है और बेटीयां वो धरती हैं जहां बीज बढ़ते हैं।

दोनों ही बेटा व बेटी का उत्तम संयमी, सदाचारी, सुशील, बलवान, बुद्धीमान, विवेकशील होना अत्यंत आवश्यक है।

जब हम सही देखते है, सुनते हैं, करते हैं, खाते हैं, पहनते हैं, बोलते हैं, पढ़ते हैं, साते हैं, व्यवहार करते हैं, तभी हम सही विचार धारा वाले बनेंगे। अगर हम गलत देखेंगे, गलत सुनेंगे, गलत करेंगे, गलत खाएंगे, गलत पहलेंगे, गलत बोलेंगे, गलत पढ़ेंगे गलत सोएंगे, तो स्वत: हम गलत व्यवहार करेंगे। कोई भी गलत व्यवहार हमें बिमार कर देगा।

माने हम में कोई कमी आ जाएगी। कमी आना मतलब शरीर दुबला पतला, न चलने की न बोलने न लड़ने की न सोचने की कोई भी शक्ति नहीं रहेगी। पुरूष शक्ति का विक्षण हो जाएगा।

व्याभिचार से दूर रखने के उपाय

यही नाश सर्वनाश का कारण बनेगा।

वयभिचार से दूर रखने के जो उपाय हम शास्त्रों और विज्ञान के आधार पर अति उत्तम है शायद आज आप उनका पालन नहीं करेंगे लेकिन फिर भी मैं आपकी सोच को शायद आपकों आध्ुनिक लगती है, उसके अनुसार समन्वय करने की कोशिश करूंगा।

बाद में मेरे देश के जो विद्वान नागरिक होंगे वो इन नियमों को भी कड़ा व लचीला बनाएंगे।

1 शिक्षण संस्थान में दूरदर्शन प्रणाली (कैमरा, माईक व कामगार स्थान पर सर्वोत्तम (कैमरा माईक) दूर दर्शकवाचक प्रणाली लगी हो जिससे कि बच्चों के माता-पिता बच्चों का ध्यान रख सकें।

2 शिक्षण संस्थान में पढ़ाने वाले पति-पत्नी हो कामगार पर तो पति-पत्नी का होना अत्यंत आवश्यक है।

3 अगर शिक्षार्थी कभी भी अपने माता-पिता के समक्ष या किसी भी रिश्तेदार या समाज में किसी भी जगह खड़े हो तो हर नर-नारी ऐसा बर्ताव करें जैसा कि भाई-बहन के रिश्ते से भी बढ़कर पिता-पुत्री आपस में हों।

4 बच्चों व शिक्षार्थियों के समक्ष किसी भी नर-नारी को, युवा, वृद्ध को, पति-पत्नी को। सदाचार को छोड़कर दूसरा कोई व्यभिचार मजाक या कुचेष्टा करने का अधिकार नहीं है।

परीक्षा कैसे हो

परीक्षा कैसे हो

60 दिनों मे से अन्तिम सप्ताह में परीक्षा हो

7 दिन तक परीक्षा चले

3 दिन विश्राम (प्लस 3) परीक्षा के बाद

50 दिन शिक्षा

उस सप्ताह कामगारों का अवकाश रहे व विद्यार्थी पूरा बाजार संभाले

जिस स्तर के विद्यार्थी है उनसे उसी स्तर का काम देश के सभी नागरिक करवाएं।

विषय उतीर्णता

अगर वो सभी काम उतीर्ण कर दें तब उतीर्ण अन्यथा अनुतीर्ण ।

अगर तीन प्रयोग शाला प्रतिदिन लगे-

एक प्रकार की प्रयोग शाला 60 दिन

एक वर्ष में 6 अलग अलग प्रकार की प्रयोग शाला लेंगी

इस व्यवस्था से हम एक वर्ष में

6 गुणा 3 बराबर 18 प्रकार की प्रयोग/कामगार शाला लगा लेंगे।

रणनीति

जब गांव-गांव जाएंगे तब हम सभी को शिक्षित कर पाएंगे

एक 300 प्रकार के व्यवसाय की 300 पन्नों की पुस्तक होगी।

जिसमें सभी शब्द लिखे होंगे।

शिक्षा राजनीति व्यापार संसाधन जीव उत्पाद संस्कार उत्सव विदेश खेल, कंप्युटर, वर्णमाला, हिन्दी अंग्रेजी आदि।

हम सहयोग मांगेंगे पहली-दूसरी, पांचवीं कक्षा के बच्चों से कि तुम्हारी टूटी फूटी पैंसिल अनपढ़ लोगों को देना, कॉपी किताबें आदि।
फिर बेरोजगार आवारा पढ़े लिखों से सहायता ली जाऐगी कि इनको तीन महीने पढ़ाना होगा।

फिर लोगों से दो कमरे, एक बाथरूम पानी की व्यवस्था, ली जाएगी जो सार्वजनिक होगा क्योंकि सरकारी जगह तो हम नहीं कर सकते 3 महीने के लिए अब उनसे एक दान राशि ली जाएगी और एक टेलीवीजन जिसमें चिप लगेगी।
जिसमें योजना बताई जाएगी। वो भी यही रखा जाएगा।
अब नागरिकों को सर्वस्व हस्तानांतरण संगणक दूरसंचार उपकरण देने की बात कहेंगे और इसके द्वारा हम आप से पूछेंगे कि क्या ये निति लागू कर दें।
अब ये यंत्र चलेगा नेटवर्क या टॉवर से वो टॉवर आपके गांव का होगा

आपके गांव के नागरिक या विद्यार्थी इसको ऑपरेट करेंगे।

व्यवसाय में आयुर्वेद और योग का समन्वय

1 दोपहर को गर्मियों में सोना लाभकारी होता है क्योंकि उस समय वात प्रबल होता है।तब ऐसी स्थिति में 1 से 2 बजे दोपहर को व 2 से 3 बजे भी दोपहर को ही सुबह से दोपहर तक काम करने वाले को सोने का मौका मिलेगा

दोपहर 2 बजे के बाद और 2 बजे से शम तक जिसका व्यवसाय समय प्रारंभ होने वाला है उसको समय मिलेगा सोने के लिए 2 बजे से पहले दोनों को एक-एक घंटा समय मिलेगा आराम करने के लिए और व्यवसाय भी बन्द नहीं करना पड़ेगा।

स्वराज्य

सर्वस्व के लिएरोजगार व अवसर
(न कि आरक्षण, राशन या योजनाएं)

जो नर/नारी किसी भी रूप में किसी काम को करने में सक्षम नहीं है।
उसे वो कार्य दिया जाए जिसे वो करने में सक्षम हो।
अब यहां हमें सभी दिव्यांग हो सकता है किसी को सुनाई न दे पर दिखाइ्र देता होगा- दिखाई न दे पर सुनाई देता होगा, बोल सकता है, पानी में भिगोई चीजें हाथ से निकाल सकता है, कुछ न कुछ ऐसा कर सकता है जिसमें आंख की जरूरत न हो हाथ, पांव, जुबान, सुनने आदि की जरूरत हो।

हम किसी भी तरह का अवलोकन किसी भी सेवक या वस्तु के गुणों और अवगुणों के आधार पर करते हैंा

वास्तव में जो किसी व्यक्ति या वस्तु का अवगुण होता है वो भी एक गुण ही होता है। ये बात अलग है कि हम उसका उपयोग करना नहीं जानते और अपनी मुर्खता के कारण उसे अवगुण कहते हैं।

जो कुछ भी सृष्टि में बना है आदि से अन्त तक सब में गुण है एक ही चीज ऐसी है जिसमें कोई गुण नहीं है वो है असत्य या झूठ। झूठ या असत्य ढूढने पर भी नहीं मिलता इसलिए उसके गुण भी हम नहीं पता कर सकते।

बाकि हर व्यक्ति, वस्तु, प्राणी आदि में गुण हैं।
उदाहरण- हीरा तो गुंगा है,बहरा है, बोल नहीं सकता, देख नहीं सकता, चल नहीं सकता, काले रंग का नहीं है, आदि-आदि करोडो आरोप हम हीरे पर लगासकते हैं लेकिन सब असत्य है इसलिए कोई गुण अवगुण नहीं है।

लेकिन हीरा सृष्टि प्रर्यन्त सबसे कठोर और चमकदार तत्व है ये उसका गुण है।

हमें दूध चाहिए किसी काम के लिए लेकिन हमें दही मिला।
इसमें दूध हमें जिस काम के लिए चाहिए था उस काम के लिए तो दूध गुणी है और दही अवगुणी है।
लेकिन दही में भी तो गुण है।
ये बात अलग है कि आपको जिस कार्य को सिद्ध करने के लिए चाहिए था उस काम में दही उपयोगी नहीं है।

तब आप इस अवस्था में मूर्ख हुए कि दूध की बजाए दही का प्रयोग कर रहे हो। न तो दही अवगुणी है ओर न ही दूध। दही के अलग गुण है, दूध के अलग गुण है और गुणों व अवगुणों के आधार पर ही सब सृष्टि प्रर्यन्त जीव-निर्जीव आदि को वर्ता या उपयोग या प्रयोग में लाया जाता है।

आपको अंधों, लंगड़ों, बहरों, गूंगों, बिमार, बुजुर्ग, वृद्ध, विधवा, कमजोर, मानसिक कमजोर (अल्पबुद्धि) कुतु-घोड़े, गाय, पेड़-पौधे, पानी, जहर, आदि सृष्टि प्रर्यन्त सब निर्जीव में गुण देखना है कि वो क्या ला दे सकते हैं।

व्यापार-अगर हम किसी व्यक्ति, पशु व पेड़ पोधे से लाभ लेते हैं तो बदले में उसको भी हमें लाभ देना है यही हमारे व्यापार की परिभाषा है।

किसी भी वर्ग को आरक्षण देना राष्ट्र के नागरिकों को, संसाधनों को, प्रकृति को नष्ट करना या गुलाम बनाने के उद्देश्य है। न कि समृद्धता।

सुभाष चन्द्र बोस की फौज में अंधा एक गोली अंधे लंगड़े का आम तोड़ना ॥

नीति निर्माण व नेता

बजट हानि होने पर वसूली

मान लिलिए कि कोई नेता एक योजना लेकर आया उस पर करोड़ों धनराशि खर्च कर दी ओर लाभ कुछ नहीं हुआ या हानि हो गई तब नेता इतना धनवान तो होगा नहीं कि सब धन राशि का खर्च उठा सके क्योंकि उस नेता की आय भी तो उतनी ही है जितनी सामन्य नागरिक की है।

अब ये खर्च तो राष्ट्र पर पड़ा।

नहीं जी दान राशि से राष्ट्र चल रहा है उसमें से एक फूटी कोड़ी नहीं लगेगी।

ये खर्च उन नागरिकों की आय में से वसुला जाएगा जिन्होंने इस नीति का समर्थन किया था।

जैसे चुनाव हुआ तब नेताओं ने नितियां बनाई ओर फिर उन पर समर्थन मांगा था उस पर नागरिकों ने मतदान किया विज्ञान आधारित तर्क देकर।

जो बात लाभ्दे उसी आधार पर तर्क ओर सुणाव एक दूसरे की बात को सही और गलत साबित किया फिर नितियां बनीं।

अब जिन नागरिकों ने उस विचार को सही साबित कर समर्थन दिया था। उसकी योजना क्रियान्वयन पर जो लाभ हुआ तब ये खर्च समस्त राष्ट्र से प्राप्त दान राशि से लिया जाएगा।

अन्यथा उनसे जिन्होंने इस नितियां विचार का समर्थन किया था।

अब कुछ समर्थन करनेवाले हो सकता है दुनिया छोड़कर भी चले गए हों तो उनका टोटल बनाकर जिन्दा निति समर्थकों से वसूल करना है न कि राष्ट्र दान से

चुनाव के समय फालतु या गलत बात लिखकर या बेवजह की कोई भी बात जो न गलत और न सही व्यक्त कर रही केवल उसकी व्यक्तिगत या व्यर्थ भावना को व्यक्त कर रही हो।

ऐसे व्यर्थ और बेकार तथ्यहीन बात को रखकर मतदान करने वाले नागरिक मतदान को एक दिन के कारावास का दण्ड मिले।

अब जिस नेता ने व्यर्थ की योजनाएं लाकर चुनाव में उम्मीद्वार बना उसको एक महीने का कारावास दण्ड मिले।

अब जिसने उच्चतर स्तर पर चुनाव लड़ा क्रमश: गांव, खण्ड, जिला,राज्य राष्ट्र, अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर उनको कितना दण्ड क्रमश:- एक महीना, 2 मास, 4 मास, 12 महीने, 3 वर्ष, 5 वर्ष।

स्तर- गांव, खण्ड, जिला, राज्य, राष्ट्र, अर्न्तराष्ट्रीय दण्ड- 1 मास, 2 मास, 4 मास, 1 वर्ष, 3 वर्ष, 5 वर्ष ।

मुद्रा निर्धारण

जैसे 1 किलोग्राम का मूल्य 50 लाख रूपये होता है

वैसे हम रूपया आदि प्रयोग नहीं करेंगे।

मेहनत आधार पर जैसे-एक दिन की मेहनत का मूल्य 50 ग्राम चांदी है

और दो दिन की 100 ग्राम

एक मीने की 1 किलो 500 ग्राम चांदी डेढ़ किलो चांदी।

अब 150 किलो चांदी बराबर एक किलो सोना।

इसे उपर निचे जो धातु होती है उनको मान रखा जाए वजन और मेहनताना के आधार पर केवल राष्ट्र प्रयोग के लिए।

विदेश व्यापार निति इससे अलग हो एक भी सिक्का राष्ट्र से बाहर नहीं जाना चाहिए।

इस पर भारतीय मोहर लगी हो। जो इसका वजन, मेहनताना, वर्ष व श्रेणी गिनती निर्धारित करे।

मुद्रा सुरक्षा

जो व्यक्ति सोने या चांदी आदि महंगे मूल्य या दाम देकर किसी भी वस्तु या सेवा आदि की खरीददारी करे।

उसको एक-एक व्यक्ति लेने और देने वाले दोनों को दोनों (लेने और देने वाले) का ब्यौरा रखना होगा।

प्रति 3 महीने के अन्तराल इन महंगी मुद्रा के प्रत्येक अंक श्रेणी क्रमांक को राष्ट्र दान पा ृ के अधिकारियों के समक्ष पेश कर तत्काल वापस ले जाने की अनुमति हो।

जो असली सोना है उसकी कीमत कम हो और जो भारतीय मुद्रा है उसकी कीमत मेहनताना और मूल्य अधिक हो।

अगर कोई भी व्यक्ति चाहे तो वो इस मुद्रा से सोना चांदी आदि खरीदकर घर रख सकता है।

लेकिन मुद्रा नहीं।

मुद्रा हमेशा चलायमान ही रहे एक हाथ से दूसरे हाथ में चलती रहनी चाहिए। अगर घर के दरवाजों और तिजौरी में किसी चीज को कैद करना है तो वो हीरे चोरी सोने आदि को करे।

भारतीय मुद्रा एक मास से अधिक किसी एक व्यक्ति के हाथ में न ठहरे।

अब इतनी मंहगी मुद्रा कहीं खो न जाए इसके लिए उसमें जीपीएस और रेडियों एक्टीव पदार्थ सेंसर डाला जाएगा।

इसके साथ-साथ एक स्पेशल क्रमांक नम्बर चिप इसी के साथ लगेगी जो उस मुद्रा का क्रमांक अन्दर वाला कुछ ओर बाहर वाला कुछ और प्रदर्शित करेगी।

बाहर वाला क्रमांक तो सबको दिखाई देगा लेकिन अंदर वाला क्रमांक दान पात्र राष्ट्र के सेवाकर्मियों को मालूम होगा।

माने इसका कोड फॉरमूला केवल राष्ट्रीय दान पात्र संघ के पास होगा न किसी इंटरनेट (अन्तरताना) आदि पर और न ही आम नागरिक पास जो मुद्रा स्थानांतरण यंत्र है उस यंत्र में।

यंत्र केवल मुद्रा का आधा कोड ही पहचान सकता है न कि पूरा।

अब ये जो कोड बने ये प्रतिवर्ष दान पात्र संघ की ओर से बदल दिया जाए।

मुद्रा के अन्दर से यानी कि मुद्रा को पिघलाकर खत्म कर दे। और उसके अन्दर नई चिप नया कोड डाल दिया जाए।

अब ये जो यंत्र हैं जो पैसे का हस्तानांतरण करता है वाह हर तरह की पहचान और नागरिकता मूल्यों से लैश होगा।

इस यंत्र की तीन तरह की कुंजी निर्धारित करने की आवश्यकता है-

1 पहली वो जो तुरंत लेनदेन करने पर काम करे।

2 दूसरी वो जो शाम को तसल्ली करे कि हो।

३ ?

हस्तानांतरण यंत्र

1 नागरिक पहचान
2 मतदान अधिकार
3 दान पात्र राष्ट्र धन खाता क्रमांक
4 जी पी एस
5 व्यक्तिगत संसाधन संपदा अधिकार (घर(दूकान, गाड़ी)
6 शारीरिक स्वास्थ्य व आयु बोधक7 वर्तमान व्यवसायी उद्बोधक
8 उच्चस्तरीय दूरसंचार संगणक प्रणाली संपन्न।
9 बहु आयामी यंत्र संबंधक (वाईफाई, टी वी, पीसी)
10 दूरसंचार
11 सर्व साधन सर्व नागरिक सर्व कार्यकर्ता सेवक स्वास्थ्य इत्यादि संपर्क स्थापन कर्ता।

इन सामान्य सेवाओं के लिए कोई भी अन्य नागरिक इस यंत्र का उपयोग कर सकता है चाहे वो किसी भी नागरिक का हो।

जैसे पंक्चर, छापल, बिमार आदि होने की स्थिति में।

लेकिन इस्तेमाल करने वाले नागरिक को अपना क्रमांक व कोड इसकी सामान्य या क्षेत्रीय सेवाएं प्राप्त करने के लिए भरना होगा।

अन्यथा ये सेवा उसके लिए बाधित हो।

तुरंत सेवा के लिए बुला सकता है बिना क्रमांक और कोड के लेकिन सहायता मिलने पर या मिलने से पहले कोड भरना अनिवार्य हो।

मजदूर

जिस दिन मजदूर या मजदूर इस देश में नही रहेगा गरीबी, अमीरी, भूखमरी, अज्ञानता, सब खत्म हो जाएगी।

क्योंकि ये मजदूर गरीब ही वो घटिया आदमी है जो अमीरों को कमा कर देता है।
अमीर वो है जो 10 गरीबों से काम ले सकता है और उनसे कमाई गई धन राशि से अमिर बनता है।

गरीब और मजदूर वो कड़ी है जो राष्ट्र के लिए हर चीज निर्माण करते हैं, ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहां इनका योगदान न हो।

लेकिन खुद अभाव मे रहता है कमजोर रहता है धन से शरीर से, ज्ञान से, तकनीक से।और जो व्यक्ति ऐसी आानता से भरा हो वो राष्ट्र के लिए हितकर नहीं हो सकता।

ये गरीब और मजदूर जितने ज्यादा होते हैं उतने ही अमीर पैदा करते हैं।

और ये अमीर जितने ज्यादा होंगे अपने धन आदि के बल पर उतने ज्यादा गरीब पैदा करेंगे।

दो बराबर बल वाली भेड़ ही आपस में लड़ सकती है, भेड़ न हाथी से लड़ी की ताकत रखती है ओर न ही उसको अपने से कम बल वाले खरगोश से लड़ने की जरूरत होती है।

आंकड़ा/ आय

हर व्यक्ति के पा दूरसंचार यंत्र दूरभाष है। लगभग 20 करोड़ जनसंख्या 131 करोड़ 10 करोड़ लोग अमीर है काम नहीं करेंगे। बाकी 10 करोड़ पक्के कार्यकर्ता हैं यदि एक करोड़ भी हों तब या 65 लाख हो तब 65 लाख गुना 100 बराबर 65 करोड़ एक करोड़ 30 लाख हो तब साढ़े 6 लाख गांवों में प्रति गांव 20 गुणा भेजे जा सकते हैं। एक युवा 100 व्यक्तियों का आंकड़ा ले आए और 20 युवा 2000 व्यक्तियों का आंकड़ा तुरंत ले आएंगे। 10 रूपये एक व्यक्ति के नागरिक देंगे तब आंकड़ा 100 रूपये आय बैठता है।

चिकित्सालय

जब स्वास्थ्य संस्थानों में सभी प्रकार की चिकित्सा सेवाएं दान पर आधारित हों तो स्वत: वो नि:शुल्क होगी।

माने कितनी भी सरल और गंभीर से गंभीर हो इलाज मुफ्त होगा तब कोई भी व्यर्थ का खर्चा नहीं करना पड़ेगा।

नियम हम ये नियम अवश्य और अति आवश्यक रूप में बना देंगे कि अगर चिकित्सा करने पर लाभ और संपूर्ण स्वास्थ्य न हो तब चिकित्सक को दण्ड दिया जाए।

जैसे कि एक मकैनिक को मिलता है। जैसे किसी मोटरसाइकिल खराब हो गई तो मर्कनिक उसे जब ठीक करके देता है तभी हम उसको मेहनताना देते हैं और जब हमारी मोटरसाइकिल पहले से ज्यादा बिगाड़ देता है तब हर्जाना उसको घर से देना पड़ता है।

लेकिन मोटरसाइकिल दूसरी ले सकते हैं। हमारी शरीर रूपी मोटरसाईकिल दूसरी नहीं ले सकते तब ऐसी अवस्था में चिकित्सक के गलती करने पर घोर-से घोर दण्ड दिया जाए।

लेकिन सही करने पर उसका मान सम्मान भी उतना ही होना चाहिए जितना कि आप अपनी मां के उपर भरोसा और सम्मान करते हैं। चिकित्सा जीवन रूपी पिता के समान होता है। इसलिए उनका सम्मान वैसे ही हो जैसे हम अपनी बेटी, गुरू के घर खाली हाथ नहीं जाते कुछ न कुछ उपहार उनके लिए ले कर के जाते हैं। चिकित्सक के घर भी हमें कभी खाली हाथ नहीं जाना है।

कुछ सामान्य बिमारियां होती है और कुछ जटिल अवस्थाएं। वैसे तो आयुर्वेद में इतना ज्यादा विज्ञान है कि हम मुर्दे को भी जिन्दा कर सकते हैं लेकिन उसको सीखने में हो सकता है हमको 5-10 वर्ष लगे।

लेकिन जब सामान्य रोगों में किसी वैध या चिकित्सक द्वारा लापरवाही बरती जाए तब वो घोर से घोर दण्डनी हो।

एक चिकित्सक सैनिक और किसान को चिकित्सक, सैनिक और किसान के प्रशिक्षण के पहले क्षण से जीवन के अंतिम क्षण तक देश सेवा की जब जरूरत पड़े सुबह-शाम दिन-रात आंधी-बरसात- बाढ़- अकाल, महामारी*- महोत्सव सदैव हर स्थिति-परिस्थिति में तत्पर और अग्रणी रहना चाहिए।

इन तीनों मे से अगर एक भी अपने आलसी, कमजोर, कायर ओर मूर्ख आदि देश या राष्ट्र सेवा के लिए भर्ती किए हैं तो देश का पतन निश्चित है।

आप तीनों सदैव घोर से घोर अपमान और दण्ड भुगतने के लिए तैयार रहें क्योंकि प्रकृति आपको हमेशा दण्डित और प्रताड़ित करती रहेगी।

लेकिन राष्ट्र से कभी देश द्रोह न करें क्योंकि आप राष्ट्र के पिता हैं और राष्ट्र की पुत्रों की भांति अपने प्राण देकर भी रक्षा करे।

हो सकता है कि चिकित्सा क्षेत्र में राम-राज्य आ जाए और कोई बिमार ही न हो।

लेकिन जरा और बुढ़ापा आना निश्चित है।

आप चिकित्सक बुजुर्गों का विशेष ख्याल रखें उनको उचित आहार, व्यायाम, और उनके दायित्व को समझाने के साथ-साथ उनके जीवन के अंतिम निष्कर्ष का भी संकलन करे।

स्वराज्य

चिकित्सालय

आप चिकित्सक बुजुर्गों की पांव, हाथ कमर, घुटने आदि दबाकर या तेल मालिस या औषधी आदि से सदैव उनकी रक्षा और सुख पहुंचाने का कार्य नियमित नित्य प्रतिदिन करे।

आप चिकित्सक जब तक संभव हो किसी विद्वान नर-नारी को स्वस्थ रख कर जब तक हो सके उनको स्वस्थ व सुखी रखें और राष्ट्र को उनके लाभ देने वाले ज्ञान को समर्पित करें।

केवल लाभ देने वाले, केवल और केवल लाभ देने वाले हानिरहीत औशषधीय पदार्थों और सेवाओं का उपयोग करें।

विषकारी औषधी और भविष्य विनाशक औषधी का सर्वथा निषेध हो।

जहां तक संभव हो सभी प्रकार की औषधीयां गांव नहीं, तो 5 गांवों में, 5 गांवों में नहीं तो दस दस में नहीं तो पूरे खण्ड स्तर और खण्ड नहीं तो जिला स्तर पर औषधी उत्पादन-औषधी निर्माण औषधी उपयोग औषधीय हानि विशेष परिस्थिति में सब वर्णित हो।

हानि से यहां मेरा मतलब ये है कि ब किसी को पीनस (जुकाम) हो जाता है तब साधारण पानी पीना हानिकारक है। परंतु उस पानी को उबालकर पीना लाभदायक है, जितना जयादा उबाला होगा तो जुकाम (पीनस) का निवारण भी करता है।

इस तरह से लाभ/हानि औषधी के साथ वर्णित हो।

औषधी, रोग, विशेष, संपूर्ण रोग, संपूर्ण अनुसंधानिक खोजें व आविष्कार, विश्व में उपस्थित हर प्रकार की औषधी उपयोग आदि सभी प्रकार की पुस्तकें, सभी प्रकार के उपकरण, सभी प्रकार से तेजी से उपचार करने के लिए उपयुक्त होने वाली दूर संचार सेवा, वाहन सेवा, औषधीय परामर्श आदि सब उपलब्ध हो।

जैसे-जैसे हम विद्वान होते जाएंगे दो लाभ होंगे-
एक तो विद्वान हो जाएंगे, दूसरा मुर्ख् नहीं रहेंगे।

विद्वान-जब एक वैध या चिकित्सक जब 20 वर्ष तक अभ्यास करता है और सीखता है तब वो इस निपूण हो जाता है कि वैज्ञानिक बन जाता है वैज्ञानिक माने ऋषि बन जाता है।

मुर्ख नहीं रहेंगे-

जब एक सामान्य नागरिक को शरीर के बारे में सही गलत खाने-पीने और बिमारी न आए स्वस्थ रहने के रहन-सहन दिनचर्या, ऋतुचर्या, विरूद्ध आहार आदि की जानकारी होगी।तो वो बिमार होगा ही नहीं।

आपातकालीन राजतंत्र

विद्रोह य आंक्समात् मृत्यु जैसी विकट और नाजुक परिस्थिति

एसी किसी भी प्रकार आपातकालीन स्थिति के लिए पहले से ही चुने हुए दक्ष उम्मीदवार चयनित हों।

एक कार्यकर्ता की पूर्ति के लिए चार दक्ष कार्यकर्ता जो पहले ही चुनें जा चुके हों, उनमें से एक तुरंत कार्यभार संभालें।
पूर्व चयनित दक्ष

1 चार वर्णों
2 चार क्षेत्रों

के मिले संजोग से हों।

यंत्रीकरण

हर गांव में भट्ठीयां हों, जहां धातु को आकार दिया जाता हो।

हर गांव में भट्ठीयां हों, जहां धातु को आकार दिया जाता हो।
न किसी अन्य स्थान से आए बने बनाए पुर्जे।

विद्यार्थि पहले आकार बनाना सीखें उसके बाद उसका उपयोग।

हर किसी के पास इतने कार्यक्षमता वाले यंत्र हो कि दो व्यक्तियों जितना काम कर सकें। न कि एक ही यंत्र हजारों यंत्रो जितना काम कर सके।

हजार यंत्रों के जितना काम कर सके एसे यंत्र भी हों, लेकिन केवल आपातकाल के लिए , जो राजा के अधीन हों।

सुई से लेकर जहाज तक की तकनीकी यहीं निर्मित हो सकती है।

हमें सीखाना है कि हमारी मातृभुमि से क्या निकालकर हम क्या र्निमाण कर सकते हैं।

इस निर्माण से क्या हानि होगी ?

1 देश
2 स्वास्थय
3 पर्यावरण की
4 जीवों की
5 धरती की आदि सब

इस निर्माण से क्या लाभ होगा ?

तकनीकी की भाषा मातृभाषा ही हो। न कि हिंदी। मैं संस्कृत समर्थक हूं।



प्रदीप कुमार घोडेला

www.facebook.com/ghoelapardeep